ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

युग प्रवर्तक
ऋषिवर दयानन्द सरस्वती

मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्यदेवो भव अतिथिदेवो भव ।।७।। तैतरीयोप०।।
मनुस्मृतौ।।

प्रथम माता मूर्तिमती पूजनीय देवता, अर्थात् सन्तानों के तन, मन, धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। दूसरा पिता सत्कर्तव्य देव। उसकी भी माता के समान सेवा करनी चाहिए।।१।। तीसरा आचार्य जो विद्या का देने वाला है, उसकी तन, मन, धन, से सेवा करनी चाहिए।।२।। चौथा अतिथि जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला, जगत् में भ्रमण करता हुआ, सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है उसकी सेवा करें।।३।।

जब परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शनमात्र से परमेश्वर का स्मरण हो वे तो परमेश्वर के बनाये पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ, जिनमें ईश्वर ने अद्भुत रचना की है, क्या ऐसी रचनायुक्त पृथ्वी, पहाड़ आदि परमेश्वर रचित महामूर्तियों कि जिन पहाड़ आदि से वे मनुष्यकृत मूर्तियां बनती हैं, उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता ? जो तुम कहते हो कि मूर्ति के देखने से परमेश्वर का स्मरण होता है, यह तुम्हारा कथन सर्वदा मिथ्या है और जब यह मूर्ति सामने न होगी तो परमेश्वर के स्मरण न होने से मनुष्य एकांत पाकर चोरी जारी आदि कुकर्म करने में प्रवृत भी हो सकता है। क्योंकि वह जानता है कि इस समय वहां मुझे कोई नहीं देखता। इसलिए वह अनर्थ करे बिना नहीं चूकता।

कामना

उस वेद के उपदेश का सर्वत्र ही प्रस्ताव हो,
सौहार्द्र और मतैक्य हो, अविरूद्ध मन का भाव हो,
सब इष्ट फल पावें परस्पर, प्रेम रख कर सर्वदा,
निज यज्ञ भाव समानता से देव लेते हैं यथा।

–गुप्त जी

यह अंक आर्य समाज कुल्लू के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा
आगामी अंक आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ८३वां विक्रमी सम्वत् २०७१ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११५ जुलाई २०१४

कुल्लू आर्य समाज के अशोक महान्

♦कृष्ण चन्द आर्य, सम्पादक आर्य वन्दना

श्री अशोक आनन्द बहुत ही मिलनसार, ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति हैं। उन पर माता स्वर्गीया श्रीमती ओमावन्ती और पिता स्वर्गीय श्री राम सरन आनन्द जी के संस्कार कूट–कूट भरे हैं। इनके पिता कुल्लू आर्य समाज के स्तम्भ थे। इस महान् पुरुष के अचानक निधन से इनकी पत्नी श्रीमती ओमावन्ती एवम् परिवार के समस्त सदस्यों पर यह एक महान् वज्रपात था। लेकिन ईश्वर विश्वासी और संकल्प की धनी स्वर्गीय ओमावन्ती ने पति वियोग के महान् दुःख का बहादुरी से मुकाबला किया ताकि इस वियोग की तपस से परिवार के अन्य सदस्यों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। ओमावन्ती जी आर्य समाज के उत्सवों में भी भरपूर सहयोग देती रही। आर्य समाज की समस्त गतिविधियों में वह बढ़–चढ कर योगदान देती रही। उनके जीवन में मुझे पतझड़ उस समय देखने को मिला जब उनके होनहार पुत्र अशोक कुमार के दोनों नेत्रों ने जबाब दे दिया। एक माँ का अपने होनहार बेटे को दोनों आंखों से वंचित होना अत्यन्त दुःख का कारण था। उधर श्री अशोक आनन्द जी ने अपनी आंखों की ज्योति चले जाने के कारण को अपने कर्मों का लेखा–जोखा मानकर अपने हंसी पूर्ण व्यवहार से अपनी माता ओमावन्ती, पत्नी तथा बच्चों को यह आभास नहीं होने दिया कि आंखों की ज्योति चले जाने से वे विचलित हो गये हैं। अपने कष्ट को ईश्वरीय आदेश समझकर श्री अशोक आनन्द अपने कर्तव्य पथ पर चलते रहे। माता ओमावन्ती जहां अपने पुत्र के ज्योतिविहीन होने के दुःख में डूब जाया करती थी, वहीं दूसरी ओर अपने पुत्र को विषाद और प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रसन्न देख कर उन्हें सुखानूभूति होती थी। काल के कराल मुख ने आखिर आर्य जगत् की इस महान् विभूति ओमावन्ती को भी २००५ में निगल लिया। अब घर, दुकान और आर्य समाज का समस्त कार्य अशोक आनन्द के कन्धों पर आ गया जिसे इन्होंने बहादुरी के साथ निभाया। आज अशोक आनन्द का परिवार ऊँचाई की बुलन्दियों पर है। इस उन्नति के पीछे इनकी पत्नी श्रीमती प्रेम आनन्द और उनके सुपुत्र रमन आनन्द का भरपूर हाथ है। यह सारा परिवार अपने पूर्वजों के पद चिन्हों पर चलकर प्रगति पथ पर अग्रसर है। श्री अशोक जी का समस्त परिवार उनके आदेशानुसार कार्य करता है। अशोक आनन्द सदा प्रसन्न चित और ईश्वरानन्द में ही मस्त रहते हैं। सभी सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों में इनका परिवार भरपूर सहयोग देता रहता है। प्रभु इनके जीवन को शांति, सुख और सन्तोष से भर दे। इस परिवार का प्रत्येक युवक जीवन में स्वस्थ रहकर १०० बसंत देखे और इनका यश यज्ञ की सुगन्ध की तरह चारों ओर फैले। प्रभु ओ३म् की शीतल छाया में इस परिवार को सुख और शांति प्राप्त होती रहे। परम पिता परमात्मा का आनन्द परिवार के ऊपर सदा वरद हस्त बना रहे। यह परिवार ऋषिवर दयानन्द की शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार करतारहे। यही हमारी इस परिवार के प्रति शुभ कामना है। प्रभु इन्हें सुख, शांति और समृद्धि के उच्चतम शिखर तक पहुंचाए और आनन्द परिवार की शीतल छाया में आर्यजन बैठकर सुखानुभूति प्राप्त कर सकें।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, संरक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348–17118, 094669–55433, 01733–220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: 1. मोहन सिंह आर्य, गांव चुरढ़, तह. सुन्दरनगर मोबाइल : 98161–25501 2. माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हिं. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द से एक भक्त ने पूछा—महाराज आप गंगा को क्या मानते हैं ? ऋषिवर ने तनिक मुस्कराते हुये उसे उत्तर दिया कि मैं भी वही मानता हूँ जो तुम मानते, जानते और पहचानते हो। लेकिन एक महात्मा के सामने सच—सच बताना। तुम क्या मानते हो ? उस भक्त ने तुरन्त कहा, मैं तो जल मानता हूँ। इस पर स्वामी जी महाराज बोले कि मैं भी वही मानता हूँ जो तुम मानते हो। इस पर आश्रम में बैठे एक भक्त ने पुनः गुरुवर दयानन्द जी से प्रश्न किया।

महाराज फिर आप गंगा को कितना मानते हो ? इस पर स्वामी जी महाराज ने अपने कमण्डल को ऊपर उठाते हुये कहा मेरे लिये गंगा बस इतनी है। कविवर बिहारी लाल ने अपने एक दोहे में कहा है :

अति अगाध अति औथरे नदी कूप सर जाय,
वो वाको सागर जहां ताकि प्यास बुझाये।

वास्तव में कविवर बिहारी लाल जी का यह कहना कि उस व्यक्ति विशेष के लिये तो वही समुद्र है जहाँ उसकी पिपासा शान्त होती हो।

अतः ऋषिवर देव दयानन्द गंगा स्थल को मुक्ति और शुद्धि का साधन नहीं मानते थे। वे वेदों के सरोवर के मराल (हंस) थे जिनका विचार और भाव सत्य का पोषण और असत्य का विनाश करना था वे कर्मानुसार से पाप और पुण्य के भोगों का काटना मानते थे। उनके धर्म ग्रन्थों पर कोई विश्वास नहीं करता था जो इस प्रकार की रचना पर विश्वास करते थे।

गंगा, यमुना, सरस्वती तीनों मिले प्रयाग,
छाली भरी समुदर की पाप कटे हरिद्वार।

स्वामी जी का मानना था कि उसे हर हालत में अपने खरे, खोटे, शुभ और अशुभ कार्यों को भोगना ही पड़ेगा। तभी जाकर वहां गन्दे, मैले और अशुद्ध वस्त्र साफ हो पाएंगे। ओ३म् नाम के साबुन से उन्हें पुनः साफ किया जायेगा।

किसी कवि ने भक्त और प्रभु के सम्बन्ध में अति सुन्दर वर्णन करते हुये कहा :—

तू खोजता मुझे था जब कुंज और वन में,
मैं ढूंढता तुझे था तब दीन के सदन में,
मैं आह बन किसी की तुमको पुकारता था,
तू था मुझे बुलाता संगीत में, भजन में।

वास्तव में भक्त को भगवान दीन—दुखियों दलितों की अविरलधारा में वह रहे आंसुओं में दिखाई देता है। उसे उन आंसुओं को पौंछने में अवर्णित सुखानुभूति प्राप्त होती है। यही सेवा का सबसे बड़ा कर्म, धर्म और मर्म है। ऋषिवर देव दयानन्द तो समाज में फैलते अन्याय, अन्धकार, अन्धविश्वास को अपने तर्कों, युक्तियों और शास्त्रों के ज्ञान से मटिया मेट करके एक नये ऋषि मुनियों के भारत का नव निर्माण करना था। सबका उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। ऋषिवर दयानन्द ने माना, जाना और समझा उन्होंने अपनी माँ के प्यार को संसार की माताओं की सेवा करने में लगाना श्रेयष्कर समझा। स्वामी जी देश की दशा, दरिद्रता, अस्थिरता और अन्धविश्वासों से इतने दुःखी, अशान्त और कलांत थे कि अपने तर्क, युक्तियों के बल पर इसका खण्डन करने को सर्वदा तत्पर रहते थे। वे अन्धविश्वासों के तम्बूओं का ना केवल विनाश अपितु सर्वनाश करना चाहते थे। भूत—प्रेत, तन्त्र—मन्त्र को स्वामी जी जाति और मानवता के धवल मस्तक पर कलंक मानते थे। उन्होंने नारी शिक्षा पर जोर दिया और वेद के पावन द्वार जो सदियों से बन्द कर रखे थे मानव मात्र और विशेषकर स्त्री और शुद्रों के लिये खोल दिया। स्वामी जी महाराज ने वेद शास्त्र का सहारा लेकर यह प्रमाणित किया। वे स्त्री जाति और अन्य दलित वर्ग सभी को वेद शास्त्र से बढ़कर अपने जीवन को सुन्दर और स्वस्थ बनाने की अति आवश्यकता है। स्वामी जी मानव मात्र के हितैषी थे। दीन दुखियों और दलितों की पीड़ा देखकर वे अशान्त हो जाते थे और उनके आंसुओं को पोंछने में कोई भी कसर नहीं छोड़ते थे। स्त्री जाति और दलितों के उत्थान में उन्होंने कोई भी कसर नहीं रखी। वे ममता की मूर्त मातृ भक्ति की पीड़ा को मानते और जानते थे। स्वामी जी के अनुसार स्त्री शिक्षा अति आवश्यक है, यह शिक्षा ही देश से अन्धविश्वासों को समूल नष्ट कर सकती है।

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' का शंखनाद लंका के राजा रावण का संहार करने के उपरान्त मर्यादापुरूषोत्तम श्री राम ने अपने अनुज लक्ष्मण के कानों में किया था। उन्होंने अपने अनुज लक्ष्मण को बताया कि मुझे स्वर्णिमलंका से कुछ लेना देना नहीं है। मुझे तो मेरी माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी प्रिय हैं। हमारे वेद बार—बार इस ओर इंगित करते हुये कहते हैं ''माता भूमि पुत्रोऽहं पृथ्वियां।'' यह जन्म भूमि मेरी माता और मैं इस पृथ्वी माता का पुत्र हूँ। ऋषि, मुनि, देवी—देवता, पीर—फकीर साधु—सन्त उसे माँ की ही प्यारी अनोखी और दुलारी कृतियें है माँ की ममता की छाया में ही वास्तविक स्वर्ग है। हमें पांचवीं कक्षा में एक छोटी सी लेकिन सारगर्भित कविता पढ़ाई जाती थी जिसमें माँ की ममता का वर्णन है। कवि कहता है : माता से बड़ा विश्व में कोई नहीं है। माता ही प्रथम स्थान में होती है।

—कृष्ण चन्द आर्य

ओ३म् महिमा

♦महात्मा आनन्द स्वामी

''जो ईश्वर का ओ३म् नाम है, वह पिता–पुत्र के सम्बन्ध की तरह है और यह नाम ईश्वर को छोड़कर और किसी अर्थ के लिए प्रयुक्त नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम है, उन सबमें से ओंकार सबसे उत्तम नाम है।''

कितनी महिमा है ओ३म् नाम की! जब ब्राह्मण ग्रन्थों को देखें, गोपथ ब्राह्मण को, शतपथ ब्राह्मण को और दूसरे ब्राह्मण ग्रन्थों को, तो ज्ञात होता है कि ओ३म् का नाम ही आत्मा की सबसे बड़ी दवा, सबसे बड़ी चिकित्सा है। रोगी है न आत्मा! जन्म–जन्म की मैल जम गई है इसके ऊपर, जन्म–जन्म के पाप–ताप और कष्ट देनेवाले संस्कार जमा हो गये हैं इसके ऊपर। उस मैल को, उन बीमारियों को दूर करने का उपाय क्या है ? शतपथ ब्राह्मण कहता है–''आत्मा की चिकित्सा और आत्मा का मोक्ष भी ओ३म् ही है।'' यह अद्‌भुत–सी बात लगती है, परन्तु विचार से देखिये यह कितनी सत्य है। बन्धनों में फँस गया है आत्मा। इनसे छूटना चाहता है। यह कैसे छूटेगा ? बड़ी–बड़ी दीवारें खड़ी हो गई हैं इसके आस–पास। उनके अन्दर इसका दम घुटा जाता है। बाहर आने की इच्छा है। वह बाहर कैसे आयेगा ? पहले दीवार टूटनी चाहिए; बन्धनों का अन्त होना चाहिए। इसलिए ऋषि ने कहा–''ओ३म् ही आत्मा की चिकित्सा है।'' परन्तु बन्धन से मुक्ति पाकर होता क्या है ? क्या नये बन्धनों की ओर बढ़ना चाहिए ? क्या आत्मा को नई दीवारें खड़ी करनी चाहिएँ अपने चारों ओर ? नहीं मेरी माँ! नहीं मेरे बच्चों! यह तो आत्मा का लक्ष्य नहीं। आत्मा का लक्ष्य है ओ३म्। इसीलिए ऋषि ने कहा, ''आत्मा का मोक्ष भी ओ३म् है।'' ओ३म् रास्ता है, लक्ष्य भी है (इस ग्रन्थ में आगे चलकर यह भी कहा कि ओ३म् ही आत्मा है।)

और माण्डूक्य उपनिषद् सारे–का–सारा ओ३म् की व्याख्या और महिमा से भरा है।

बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य जी कहते हैं, ''ओ३म् के जाप से पाप नष्ट होते हैं, जल जाते हैं, भस्म हो जाते हैं। प्राणायाम के द्वारा प्राणों को वश में करके धारणा और ध्यान की अवस्था से ऊपर उठकर जब भक्त ओ३म् का अजपा जाप करता है और उस जाप में और सबको, अपने–आपको भी भूल जाता है तो इसके सभी पाप, सभी बुरे कर्म, इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे प्रचण्ड भास्कर के निकलने पर अन्धकार समाप्त हो जाते हैं।'' यह सब कुछ ओ३म् के जाप से होता है।

पुराणों के अन्दर भी ओ३म् की महिमा बार–बार वर्णन की गई है। अग्निपुराण के २१५ वें अध्याय के ये शब्द सुनिये, जो ओंकार को जानता है वही योगी है, वही रुकावटों का नाश करने वाला है। सारे मन्त्रों का सार यह ओ३म् है। इसकी सहायता से पापी भी इस अथाह भव–सागर से पार उतर जाते हैं।'' कैसे उतर जाते हैं ? क्या उतर जाते हैं ? इसका उत्तर प्रश्नोपनिषद् देता हैं ? इस उपनिषद् का पाँचवाँ प्रश्न सबका–सब ओ३म् के सम्बन्ध में है। सत्यकाम महर्षि पिप्पलाद से पूछता है, ''गुरुदेव, सारी आयु ओ३म् के जाप करने का फल क्या है ?'' पिप्पलाद कहते हैं, ''इस ओ३म् से आत्मा वहाँ पहुंचता है, जहाँ ऊपर ब्रह्म और परब्रह्म का साक्षात् हो जाता है।'' अपर ब्रह्म भगवान् का विश्वभर में फैला हुआ विराट् रूप है। इसी को देखकर वेद ''नमः विश्वरूपाय'' कहता है। हम यहाँ बैठे हैं, इससे परे दीवारें हैं। दीवारों से परे मकान या सड़क, उनसे परे और मकान और सड़कें। इस नगर से आगे कुछ खाली जगहें हैं, खेत हैं, जंगल हैं, उनसे परे और नगर हैं, और गांव हैं। उनके परे फिर खाली जमीन, फिर नगर, फिर ज़मीन, फिर नगर, पहाड़, नदियाँ, नाले, झीलें, मरुस्थल, इन सबको हम एक देश कहते हैं। इस देश के तीन ओर एक सागर लहराता है। एक ओर हिमालय खड़ा है। इनसे परे और देश हैं, और सागर, और पहाड़, और मरुस्थल हैं। इस प्रकार यह पृथिवी है, सूर्य की रोशनी में चमकती हुई, उसकी रोशनी के बिना अंधेरी। पृथ्वी और सूर्य के बीच में बुध और शुक्र हैं। पृथ्वी से परे मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण और ब्रह्म नाम के तारे हैं। यह हमारा सौर–मण्डल है। ऐसे अरबों सौर–मण्डल हैं इस विश्व में, खरबों मीलों में फैले हुए। रात के समय हम जो तारे देखते हैं, उनमें से प्रत्येक तारा एक सूर्य है, हर सूर्य के साथ कितने ही ग्रह हैं। मानवी विज्ञान, मानवी ज्ञान और मानवी कल्पना के अनुसार अनन्त विश्व हैं। इसका अन्त दिखाई नहीं देता, और इस विश्व के एक–एक कण में, सामने जलती हुई इस छोटी–सी बत्ती में, और लाखों मील ज्वालाएँ फेंकते हुए सूर्य में, इस पृथ्वी से परे सौर–मण्डल के दूसरे ग्रहों पर, उनसे परे दूसरे सौर–मण्डलों में, अरबों–खरबों सूर्यों में ईश्वर की शक्ति कार्य करती है। ईश्वर की ज्योति चमकती है। पृथ्वी की नीची–से–नीची गहराई में, आकाश की ऊंची–से–ऊंची चोटियाँ पर, हर ओर, हर स्थान पर, हर समय वह ही वह है। यह उसका अपर ब्रह्म रूप है, जिस ओ३म् का जाप करने वाला हाथ पर रखे खिलौने की भांति देखता है। परन्तु उससे ऊपर, उससे परे भी तो ब्रह्म है–विश्व से परे, प्रकृति से परे, परम कल्याण रूप, परम शान्त, परमानन्द, परमेश्वर, परब्रह्म।

ओ३म् का जाप करने वाला ईश्वर के दोनों रूप देखता है। अपर ब्रह्म का रूप इससे आकर कहता है :–

रोशन हैं मेरे जलवे हर शै में हाय ! लेकिन
है चश्म कोर तेरी, क्या है कुसूर मेरा ?

और ओ३म् का जाप करते–करते जब भक्त अपने–आपको भूलकर, प्रकृति को भूलकर, अन्तर्धान होकर देखता है, जब बाहर के पट बन्द हो जाते हैं और अन्दर के पट खुल जाते हैं, तब उस परब्रह्म का दर्शन होता है। यह ओ३म् के जाप की महिमा। परन्तु यह जाप होता कैसे है ? वह भी सुनिये! ओ३म् का जाप तीन प्रकार से होता है–पहला जाप एक मात्रा का, दूसरा दो मात्रा का, तीसरा तीन मात्रा का। एक चार मात्रा का जाप भी होता है परन्तु इसका वर्णन नहीं करूंगा। आप नहीं समझ सकेंगे।

एक मात्रा से जाप करने की विधि यह है कि जैसे मन्दिर का घण्टा लगातार ऊंचे स्वर में गूंजता है, इसी प्रकार ऊंचे स्वर से ओ३म् का उच्चारण कीजिए। बार–बार कीजिये। इस प्रकार कीजिये कि इसके अतरिक्त और कोई ध्वनि आपको सुनाई न दे। लगातार गूंजती हुई, झंकारती हुई ध्वनि। ऐसा करने से दुनिया में जितना भी धन है, जितनी भी शक्ति है, जितनी भी प्रसिद्धि है, जितनी आप चाहते हैं, उतनी आपको मिल जायेगी, वह आपकी हो जायेगी।

देवताओं की संख्या

♦देवराज आर्य मित्र, नई दिल्ली

यह कहा जाता है कि हिन्दुओं के ३३ तैतीस करोड़ देवता हैं। कोई हमें एक सौ देवताओं के ही नाम बता दे। प्रिय सज्जनों इस धारणा को भ्रम को, दूर कर लो। तैतीस करोड़ नहीं तैतीस कोटि के देवता होते हैं। कोटि का अर्थ श्रेणी, प्रकार है। अर्थात् तैतीस प्रकार के देवता होते हैं। जो कभी नहीं सोते, सदैव जागते रहते हैं अर्थात् सक्रिय रहते हैं। हम रात में विश्राम करते हैं, सो जाते हैं परन्तु ये देवता कभी न तो विश्राम करते है न ही सोते हैं। पौराणिक बन्धुओं के देवता आषाढ़ में सो जाते हैं, कार्तिक मास में उठ जाते हैं। पता नही इनके कोन से देवता हैं। नोट करो आपको ३३ तैतीस प्रकार के देवताओं के नाम बताता हूँ। आठ (८) वसु+(११) ग्यारह रुद्र+बारह (१२) आदित्य+एक (१) इन्द्र+एक (१) प्रजापति=३३देवता। आठ वसु=जल+वायु+अग्नि+पृथ्वी+ आकाश + सूर्य + चन्द्रमा+नक्षत्र=८। ग्यारह रुद्र=प्राण, अपान, व्यान उदान समान पाँच महाप्राण+पाँच लघु प्राण देवदत्त+नाग+कर्म कृकल आदि+एक आत्मा=११ जब ये शरीर से निकलते हैं तब रुलाते हैं इसलिये इन्हें रुद्र कहते हैं। एक विद्युत् का देवता इन्द्र+एक प्रजापति इनकी पूजा यज्ञ हवन द्वारा करते हैं।

दिल से न भुला देना

♦डा. स्वामी आर्येश आनन्द, सिरोही रोड़, पिण्डवाड़ा (राज.)

दयानन्द की मोहब्बत को
दिल से न भुला देना।
जब याद उनकी आवे
टंकारा चले आना।

कण–कण में समाई है
माटी में महक उनकी
''डेमी'' में ''वो'' नहाता था
तुम भी नहा लेना।।

''योग ध्यान'' करना है,
''राम गुफा'' चले आना
''ऋषि'' ''मुनियों'' की ''भूमि है
आबू–राज चले आना।

''वेद'' ज्ञान की तमन्ना है
मथुरा चले आना
''विरजानन्द'' की कुटिया है
''यमुना'' से नहा लेना।

''पाखण्ड खण्डनी'' फहराई जहाँ
''मोहन आश्रम'' चले आना,
कुम्भ के मेले में
गंगा में नहा लेना।।

''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना तो
''नवलखा'' में रचाई थी
''महर्षि का पुरुषार्थ देखने
उदयपुर चले आना।

शास्त्रार्थ महारथी की
काशी में शान थी
सच्चे शिव के दर्शन को
काशी शास्त्रार्थ में चले आना।

'जीवन–ज्योति' जलाई थी
वेदों की ज्योति जलाकर के
''महर्षि दयानन्द'' को नमन करने
''आर्येश'' ''अजमेर'' चले आना।।

।। ओ३म्।।

ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी चाहिए। जिससे सुख प्राप्त होगा ही, कष्ट आवेंगे ही नहीं। –स्वामी दयानन्द

"वार्षिक उत्सव आर्य समाज कुल्लू"

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी १३ से १५ जून २०१४ तक आर्य समाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव अपार श्रद्धा, भक्ति भावना और हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः श्रेष्ठ कर्म अग्निहोत्र का आयोजन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामफल सिंह आर्य ने ब्रह्मा के पद पर आसीन होकर वेदमन्त्रों के उच्चारण से यजमानों एवं उपस्थित धर्मप्रेमियों से हवन कुण्ड में आहुतियाँ डलवाई। सभी श्रद्धालुओं ने एकाग्रचित होकर पूर्ण श्रद्धा एवं लग्न से यज्ञ कार्य सम्पन्न किया। आर्य समाज के प्रधान श्री अशोक आनन्द, महामन्त्री श्री गिरिजा नन्द, कोषाध्यक्ष श्री मनसा राम तथा अन्य पदाधिकारियों ने समारोह को सफल बनाने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी। आर्य समाज के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता बाहर से आने वाले धर्मप्रेमियों का स्वागत करते नज़र आऐ। सभी के नाश्ता, भोजन और रात्री विश्राम की उत्तम व्यवस्था की गई थी। जिसके लिए सभी पदाधिकारी एवं महिला कार्यकर्त्ता बधाई के पात्र हैं। आर्य आदर्श विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सत्यपाल भटनागर जी ने मंच संचालन बहुत कुशलता पूर्वक निभाया। पानीपत से पधारे युवा भजनोपदेशक संदीप जी ने प्रभु भक्ति में बाधक छल–कपट, वैर–द्वेष से दूर रहने का उपदेश देते हुए कहा :–

मन रूपी दर्पण से अज्ञानरूपी धूली को साफ करने पर ही तत्वज्ञान का साक्षात्कार होता है। अज्ञानता ज्ञान प्राप्ति में बाधक है। लोभ–मोह के वशीभूत होने के कारण मानव जीवन सार्थक नहीं हो सकता। गृहस्थी को धनवान होना चाहिए किन्तु पाप से कमाया धन न हो, ऐसा धन परिवार में विनाश का कारण बनता है। धर्मस्थलों में जाकर हम शरीर तो पवित्र कर लेते हैं किन्तु मन मैला ही रहता है जब कि हमारा लक्ष्य लोभ–मोह, इर्ष्या–द्वेष रूपी मन की मैल का त्याग करना होना चाहिए। जिस पर प्रभु–कृपा हो वही ईश्वर भजन कर सकता है। मानव अपने जीवन काल में वायु, पृथ्वी और जल को अशुद्ध करता है। इनसे ऊऋण होने के लिए हवन जैसा श्रेष्ठ कर्म करना अति आवश्यक है। श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धा। वर्ष में श्राद्ध १६ होते हैं, उन दिनों हम पंडितों को छप्पन प्रकार के भोज्य पदार्थ खिला कर सन्तुष्ट हो जाते हैं और कल्पना करते हैं कि हमारे पितरों को भोजन प्राप्त हो गया। क्या वर्ष के शेष ३४६ दिन पितरों को भूख नहीं सताती ? संदीप जी ने कर्णप्रिय, मधुर और शिक्षाप्रद भजन सुनाकर श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया :–

'इस मानव चोले को, सफल बना ले तदवीर से।
आखिर कोई रह न जाए, शिकवा तकदीर से।।'

रोटी, कपड़ा और मकान तो खोटे कर्म करने वालों को भी मिल जाते हैं किन्तु मुख्य उद्देश्य तो 'मनुर्भव' हो, हैवान नहीं इन्सान बन। घर ईंट, पत्थर और सीमेंट से नहीं सुसंस्कारित सन्तानों से बनता है। आज माता–पिता अपने बच्चों को समय नहीं दे पाते और वृद्धावस्था में शिकायत करते हैं कि हमारे बच्चे हमारा कहा नहीं मानते। माताओं को सावधान करते हुए अपना और बच्चों का भविष्य संवारने का परामर्श दिया :

सब कुछ लुटा के होश में आए, तो क्या किया।
दिन में गर दीप जलाऐ, तो क्या किया।।

कण्डाघाट से पधारे श्री देव प्रकाश जी ने विशेष रूप से बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहाः–

दुनियां का सब से धनी देश अमेरिका है। मानव जीवन की सारी सुख सुविधाऐं वहां विद्यमान हैं किन्तु २०५० तक अमेरिका सबसे बड़ा बीमार देश बन जायेगा। वहां के लोग घर का ताजा और पोषक भोजन न करके जंकफूड का अधिक प्रयोग करते हैं। आप बच्चे हमारे देश का कल हैं। बच्चों का स्वास्थ्य हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। नौनिहालों को सावधान करते हुए देव प्रकाश जी ने ज़ोर देकर कहा–पीजा, वर्गर, नूडल, अंकल चिप्स, कोक, पैप्सी, लेज़ आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। पैकेज फूड, प्रोजन फूड जो फ्रीज में रहते हैं उनके पोषक तत्व शत प्रतिशत समाप्त हो जाते हैं। इनको ग्रहण करना अपने स्वास्थ्य के प्रति खिलवाड़ है। सोफ्ट ड्रिंक्स तथा उपरोक्त सभी खाद्य सामग्री हमारे देश के उत्पाद नहीं हैं। इनको खाने से ओबीज और बेकाबू मोटापा हो जाता है और मोटा आदमी पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं होता क्योंकि मोटापा अपने में एक गम्भीर बीमारी है। बच्चो ! हम आप का भविष्य प्रोटैक्ट करना चाहते हैं। अमेरिका से एक इन्जैक्शन भारत लाया गया जिसे दुधारू पशु को लगाने से वह अधिक दूध देने लगता है। इसका प्रभाव पशु के मांस पर भी पड़ता है। जब पशु मर जाता है तो उसका मांस गिद्ध खाते हैं। इसका कुप्रभाव देखिये, गिद्ध मर गये अब गिद्ध चिड़ियाघर या तस्वीरों में ही नज़र आते हैं। उस इन्जैक्शन के कारण भारत में एक समस्या पैदा हो गई, मरे पशुओं को ठिकाने कैसे लगाया जाय ? इस प्रकार की सनसनीखेज और चौकानें वाली बातें देव प्रकाश जी ने धर्मप्रेमियों को बताई। आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र. के वरिष्ठ उपप्रधान श्री कृष्ण चन्द आर्य ने अपने विचारों की अमृतवर्षा करते हुए बताया कि मैं दीनानगर दयानन्द मठ में युवा भजनोपदेशक श्री संदीप जी से पहली बार मिला था। मैं इन के विचारों से बहुत प्रभावित हुआ था। मैंने कहा–'संदीप जी, हमारी आयु

तो ढ़ल गई है अब आर्य समाज का भार आप जैसे युवाओं के कन्धों पर है।' सन्दीप जी ने मेरी बात का उत्तर कुछ इस प्रकार दिया और मैं निरूत्तर हो गया :–

'पुराना ठूंठ बरगद का, हम ने फिर हरा देखा।
लगाये नये पौधे जो, उन्हें अधमरा देखा।'

संसार का उपकार हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हमें पथभ्रष्ट नहीं पथप्रदर्शक बनना है। आर्य समाज जात–पात का घोर विरोधी है।

कबीर जी ने कहा था :–
जाति पाति पूछे नहीं कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई।

अन्याय, अत्याचार, पाखण्ड, अन्धविश्वास और असत्य के प्रति कभी भी और किसी भी परिस्थिति में हमें घुटना टेक नीति नहीं अपनानी चाहिए। सभी के जीवन में सुख–दुःख, बसन्त–पतझड़ आते जाते हैं। हर परिस्थिति में धैर्य से नाता जोड़ कर रखें।

'देह धरे को दुःख है, सब काहू को होय,
ज्ञानी काटे ज्ञान से, अज्ञानी काटे रोय।'

आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्र. के महामन्त्री एवं यज्ञ के ब्रह्मा श्री रामफल सिंह आर्य जी ने पाप कर्म की परिभाषा बताते हुए कहा–'जो कार्य हम दूसरों से छिपा कर करते हैं तथा जिसको बताने में हम भय और लज्जा अनुभव करें वह पापकर्म है।' हमारा देश विश्व गुरू के नाम से जाना जाता है। सभी देशों के लोग यहीं आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। प्राचीनकाल में हमारे यहाँ घरों में ताले नहीं लगते थे, चोरी चकारी का नाम नहीं था। माताऐं, बहनें निर्भय होकर अकेले आती जाती थीं, उनका मान सम्मान होता था। आर्यों की इतनी सुन्दर व्यवस्था उत्तम शिक्षा के कारण थी। आर्य जी ने धर्मप्रेमियों और विद्यार्थियों को आज्ञाकारी और गुरूभक्त आरूणि की कहानी सुनाई, जिसका यश आज भी जीवित है। बिहार राज्य में स्थित 'नालन्दा' विश्वविद्यालय जहाँ विदेशों से युवा आकर विद्या ग्रहण करते थे। चीनी यात्री फाह्यान ने उस युनिवर्सिटी का वर्णन अपने यात्रा संस्मरण में किया है। आज उसकी जीर्ण शीर्ण अवस्था देखकर महान् कष्ट का अनुभव होता है। मुसलमान लुटेरों ने इसका अस्तित्व मिट्टी में मिला दिया। महाभारत के युद्ध के उपरान्त हमारे धर्म का पतन होता चला गया। लोग श्रद्धा से आर्य समाज के साथ जुड़े, ऋषि के उपदेशों का प्रचार प्रसार सर्वत्र हो तो आदर्श जीवन का निर्माण हो सकता है। श्रद्धालु नित्यप्रति हवन करें, बच्चों और युवाओं को इसके लाभ बताऐं और मानव जीवन में इसका उपयोग बताऐं। कुल्लू आर्य समाज में उत्तम कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आयोजकों का धन्यवाद किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्र. के अध्यक्ष एवं आर्य समाज कण्डाघाट के प्रधान, एडवोकेट श्री प्रबोध चन्द्र सूद जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज लोग धागा–ताबीज, टोने टोटके और टी.वी. पर प्रसारित होने वाले यन्त्र–मन्त्र के कारण सही मार्ग से भटक गये हैं। आर्य समाज भटके हुए भ्रमित लोगों को सही मार्ग पर वेद प्रचार के माध्यम से लाने के लिए प्रयत्नशील है। आर्य समाज के दस नियम सभी को कण्ठस्थ होने चाहिऐ। ऋषि का ऋण उतारने के लिए घर–घर में उनकी शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य हो। वार्षिक उत्सव के आयोजकों ने बाहर से आर्य धर्म प्रेमियों के रात्रि ठहराव एवं भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था की थी। उसके लिए इनका हृदय से धन्यवाद। उत्सव को सफल बनाने के लिए दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य, महामन्त्री श्री रामफल सिंह आर्य, आर्य समाज के प्रधान श्री अशोक जी, प्रधानाचार्य श्री सत्यपाल भटनागर तथा अन्य समाजों से पधारे धर्मप्रेमियों का धन्यवाद और आभार। दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी सदानन्द जी महाराज ने बड़े पते की बात बताई–हम लोग रामराज्य की कल्पना तो करते हैं किन्तु जहां मंथरा जैसी खलनायिका होंगी वहां तो बसा बसाया घर उजड़ जायगा और सब उथल–पुथल हो जायेगा। देश खुशहाल हो सकता है, उसकी प्रगति होगी शर्त यह है कि कोई षड्यन्त्रकारी (अमित्र) न हो। राजस्थान से सुबोधानन्द जी सांसद हैं। मई, २०१४ में चुनाव जीत कर संसद में पहुंचे हैं। अपने क्षेत्र में गांव–गांव में उन्होंने मित्र बनाऐ हैं। धनबल के बिना मित्रों के बल पर ही वे जीते हैं। सच्चे मित्र की पहचान बताते हुए स्वामी जी ने कहा–'जो मित्र मुंह पर कमियां बताऐ और लोगों से मित्र के गुणों को प्रकट करे। दुःख की घड़ी में साथ न छोड़े। समय पर धन से सहायता करे और सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे।' सच्चे मित्र के कारण ही मुठ्ठी भर पांडवों को महाभारत में विजय प्राप्त हुई थी। बच्चों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा–देव प्रकाश जी ने जंक फूड के बारे जो बातें आपको बताई उन्हें अपनी गांठ में पक्की तरह बांध लो। पीजा, बर्गर, नूडल्ज़, कोला, पैप्सी से तौबा कर लो। हम सब आपको स्वस्थ और रोगमुक्त देखना चाहते हैं। अमेरिका २०५० में बीमार हो न हो किन्तु मेरे देश के बीमार होने की पूरी सम्भावना है। इसलिए अभी से सावधान हो जाओ। लोहपुरूष स्वामी स्वतन्त्रता जी ने १६३७ में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना की थी। उनके दर्शन करने का सौभाग्य तो प्राप्त नहीं हुआ किन्तु उनके शिष्य के साथ ३६ वर्ष गुजारे हैं। बाग को देखकर माली का पता लग

जाता है। यज्ञ का मुख्य उद्देश्य है–'आर्य सुखी हों।' आर्य प्रतिनिधि हिमाचल प्रदेश के प्रधान 'सूद' जी हैं। मेरा आप हिमाचल वासियों को एक परामर्श है। 'मूल' को छेड़ना मत, और 'सूद' को छोड़ना मत। मैंने जांच परख कर ली है–सूद जी की सोच बहुत ऊंची है। आर्य समाज के प्रति इनके दिल में तड़प है। कुछ खास कर गुजरने की ललक है सूद जी में। गुरू ग्रंथ साहब में लिखा है–दस नां की कमाई बांट कर खा, फिर ईश्वर में ध्यान लगेगा। 'अन्नमेव ब्रह्मा' अनाज का दुरूपयोग न करो। भोजन करती बार एक भी दाना जूठा न छोड़ो। स्वामी जी ने आर्य समाज कुल्लू में दो दिन १० से १२.३० बजे तक निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर लगाया, जिस में रोगियों का परीक्षण कर निःशुल्क दवाईयाँ वितरित कीं। अनेक बीमार लोगों ने इस अवसर का लाभ प्राप्त किया। आर्य आदर्श विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सत्यपाल भटनागर जी ने स्वामी जी, भजनोपदेशक संदीप जी, श्री सूद जी, श्री रामफल सिंह आर्य, श्री कृष्ण चन्द आर्य एवं सभी धर्मप्रेमियों का उत्सव में पधारने और शोभा बढ़ाने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। प्रधान श्री अशोक जी ने स्वामी जी और संदीप जी को दक्षिणा प्रदान कर आशीर्वाद प्राप्त किया। शान्ति पाठ के उपरान्त सभी ने ऋषि लंगर में सुस्वादू भोजन ग्रहण किया। ऐसा था आंखों देखा और कानों सुना कुल्लू आर्य समाज का वार्षिक उत्सव।

'मातृ देवो भव'

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

'मातृ देवो भव' तैतरीय उपनिषद का उपदेश है, 'माँ की सेवा, देव पूजा के समान होती है।' महाभारत में यक्ष के प्रश्नों में से एक प्रश्न था, ''पृथ्वी से बड़ा कौन ?'' युधिष्ठर का उत्तर था, ''माता'' अर्थात् माता का स्थान पृथ्वी से भी बड़ा होता है। यही हमारी भारतीय संस्कृति का पक्ष है। माता किसी भी देश की हो, माँ–माँ ही होती है, उनका बच्चों के पालने का तरीका अलग–अलग हो सकता है। माता परिवार की धुरी होती है। उसे धातृ कहा जाता है, क्योंकि वह बालक/बालिका को गर्भ में धारण करती है। वह अम्बा है क्योंकि शिशु का विकास उसके गर्भ में ही होता है। वह जननी है, क्योंकि वह बच्चे को जन्म देती है। वह ममता से पूर्ण होने के कारण माता कहलाती है। माँ का कोई विकल्प नहीं हो सकता। माता के त्याग की तुलना नहीं की जा सकती। वह बच्चे की पहली गुरू होती है। वही बच्चे को संस्कारित करती है। बच्चे के जन्म के साथ, एक माता का भी जन्म होता है। नारी जब माता का रूप धारण करती है तो ममता का भाव उसके उर में प्रस्फुटित हो जाता है। उसके स्तनों में दूध आ जाता है। वह प्रेम सेवा तथा त्याग की देवी बन जाती है। सेवा तथा त्याग की देवी बन जाती है। तभी कहा गया है, ''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि।''
''जननी तथा जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती हैं।''

''माता निर्माता भवति' माता बच्चे को जन्म देकर लालन पालन ही नहीं करती निर्माण भी करती है। संसार की कई महान् हस्तियों ने यह माना है कि उन्हें उच्च स्थान तक पहुंचाने में माँ की भूमिका अधिक रही। महात्मा गान्धी ने धर्म के प्रति आस्था, सन्तोष तथा धैर्य के गुण माता से ही सीखे। वह माता के साथ मन्दिर जाते थे। वर्षा ऋतु में माता ने दिन में एक बार खाने का व्रत लिया और वह भी सूर्य दर्शन के बाद। वर्षा ऋतु में कई बार सूर्य दर्शन होते ही नहीं थे। बच्चे आकाश को ताकते रहते। सूर्य की किरण ज्योंही दिखाई देती बच्चे माँ के पास दौड़े जाते ताकि माँ सूर्य दर्शन कर रोटी खा सके। परन्तु माता के बाहर आने से पूर्व सूर्य बादलों के पीछे चला जाता। यह देख माता हंसते हुये कहती। आज प्रभु चाहते हैं कि मैं भोजन न करूं। प्रभु के प्रति कितनी गहरी आस्था, कितना धैर्य तथा कितना सन्तोष! गांधी जी भी इन गुणों से परिपूर्ण थे। छत्रपति शिवाजी की माता जीजाबाई ने पति के तिरस्कार के कारण अपना सारा ध्यान अपने पुत्र के निर्माण पर लगा दिया। उसे निडर साहसी, आत्म विश्वासी, वीर, आत्म सम्मानी और देश भक्त बनाया। इन गुणों के कारण ही शिवाजी ने दृढ़ मराठा राज्य की नींव रखी और मुगलों के साम्राज्य को हिला के रख दिया। औरगंज़ेब ने मरने से पूर्व स्वयं कहा था कि दक्षिण के नासूर ने मुझे मार दिया। वह शिवा जी को पहाड़ी चुहा कहता था। क्योंकि शिवा जी अचानक आक्रमण करता, शत्रु को तितर–वितर करता और छुप जाता था। मुगल साम्राज्य से लोहा लेना आसान न था। इसलिये शिवा जी गोरिला युद्ध करता। वह शत्रु सेना शक्ति क्षीण करता और चला जाता। माता से प्राप्त गुणों के कारण ही वह अपने उद्देश्य में सफल हो सका। इंग्लैंड के सिंहासन का उत्तराधिकार जब जर्मनी के हेनोवरवंश के राजाओं को मिला तो सम्राट जार्ज प्रथम तथा द्वितीय ने शासन में कोई रूचि न दिखाई। परन्तु अपने पिता तथा दादा के विपरीत जार्ज तृतीय बड़ा सफल राजा सिद्ध हुआ, क्योंकि उसकी माता उसे सदा स्मरण कराती रहती थी, जार्ज राजा की तरह व्यवहार करो या कहती, 'जार्ज राजा बनो'। ऐसे कितने ही उदाहरण दिये जा सकते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि माता कैसे निर्माता होती है।

आज कल की मातायें भी अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखती हैं। सीमित सन्तानें होने के कारण वह उनकी छोटी से छोटी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में हिचकिचाती नहीं। वह उन्हें स्कूल के लिये तैय्यार करती हैं। बस्ता स्वयं उठाती हैं। यहाँ तक कि उनका गृह कार्य भी स्वयं कर देती हैं। उन्हें कोई काम नहीं करने देतीं। रोटी खिलाने के लिये पीछे दौड़ती हैं। जो मांगे उसे देती हैं। मुझे नहीं पता उन्हें वे क्या बनाने जा रही हैं। परन्तु इस प्रवृति के दुष्परिणाम आने लगे हैं। बच्चे माँ पर इतने निर्भर हो जाते हैं कि माँ की सहायता तो क्या करनी वह छोटे–छोटे कार्यों के लिये भी माँ को पुकारते हैं। वे श्रम से दूर भाग रहे हैं। कठिनाई आने पर टूट जाते हैं या भाग खड़े होते हैं। वे संघर्ष करना भूल चुके हैं। उन्हें जीवन के लिये योद्धा की तरह तैय्यार किया जाना चाहिये। उन्हें परिवार तथा बड़ों के प्रति सम्मान, प्रेम तथा श्रद्धा के संस्कार दिये जाने चाहिये। उन्हें संघर्ष करना सिखाना चाहिये ताकि कठिनाई आने पर वह सामना कर सकें। उन्हें निठल्ला, आलसी तथा संस्कार विहीन बनायेंगे तो उनसे क्या उम्मीद की जा सकती है। पहले संयुक्त परिवार होते थे। यदि बच्चों के लालन पालन में कहीं चूक हो जाती तो बड़े बूढ़े हस्तक्षेप कर सुधारते थे। परन्तु एकाकी परिवार में सुधार की उम्मीद कम ही रह जाती है।

१२ मई को हर वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय मातृ दिवस मनाया जाता है। अमेरिका में इस दिन छुट्टी होती है ताकि वहां के बेटे/बेटियाँ घर जाकर माँ की सुध ले सकें तथा उन्हें माँ के त्याग की याद आ सके। भारत में भी पश्चिम देशों की नकल पर यह दिन मनाया जाने लगा है। भारत में यह डे मनाने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ हर बच्चे का नैतिक कर्तव्य समझा जाता है कि वह अपने माता–पिता की सेवा करे। हमारी संस्कृति भी यही कहती है। पश्चिम की नकल करते हुये यह डे मनाने का अर्थ माता–पिता की सेवा एक दिन के लिये सीमित न हो जाये या वे एक कार्ड पर 'हेप्पी' मदर्ज़ डे' लिखकर अपने कर्तव्य से मुक्ति न समझ लें। पश्चिम की तरह बच्चे पैसे की होड़ तथा अपने स्वार्थ में इतना न खो जायें कि माता–पिता जीवन का अन्तिम चरण वृद्ध आश्रम में या एकाकी बितायें।

कुछ समय पूर्व घटित एक घटना की चर्चा समाचार पत्रों में खूब हुई जिससे पता चलता है, कि समाज किस ओर जा रहा है। एक विदेश में रहने वाला भारतीय अपनी पैतृक सम्पति बेचने आया जिसमें एक मकान भी था, जिसमें उसकी बूढ़ी मां रहती थी। मकान मां के नाम था। उस ने वह मकान बेचने का अधिकार मां से यह कहकर ले लिया कि वह उसके साथ विदेश में रहेगी। मकान को बेचने के पश्चात, वह माँ के साथ हवाई पट्टी पर सामान सहित गया। उसने माँ को बाहर बैठाया और माँ को यह कहा कि वह जहाज़ में सामान चढ़ाकर उसे ले जायेगा। माँ वहीं बैठी प्रतीक्षा करती रही और बेटा जहाज़ में उड़ कर वापस चला गया। यह मर्यादा पुरूषोत्तम राम के देश में हुआ जो पिता के दिये वचन निभाने के लिये १४ वर्ष राजपाट छोड़कर वनवासी बन कर रहा। यह श्रवण का देश है जो अपने अन्धे माता–पिता को वेहंगी में डालकर तीर्थाटन कराता रहा। बच्चे को पालने में माता के त्याग और तपस्या की तुलना नहीं की जा सकती। यदि आप सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती माँ को देखें कि वह अपने बच्चे का ध्यान कैसे रखती है, आप दंग रह जायेंगे। वह अपने कार्य को पूर्ण तत्पर्ता से निभाती है परन्तु बच्चे की देख–रेख में कमी भी नहीं आने देती। यह बात हमारी आधुनिक पढ़ी लिखी कामकाजी महिलाओं के लिये अनुकर्णीय है। जो मातायें अपने बच्चों को संस्कार देना नहीं भूलती, उनके बच्चे अपने माता–पिता के प्रति अपने कर्तव्य को नहीं भूलते। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को माता की बीमारी की जानकारी ऐसे समय मिली जब वर्षा हो रही थी। उनका घर नदी पार था और नदी बाढ़ ग्रस्त थी। वह ऐसे में ही माँ की देख–रेख में तुरन्त निकल पड़े। उन्होंने नदी तैर कर पार की क्योंकि कोई नाविक नाव के साथ बाढ़ ग्रस्त नदी में उतरने के लिये तैय्यार न था और माता के पास सेवा के लिये जा खड़े हुए। नेपोलियन बोनापार्ट अपनी माता का अनन्य भक्त था। उसके पास युद्ध में पकड़े गये ऐसे एक कैदी सैनिक को लाया गया जो अवसर पा भाग रहा था। पूछने पर उसने बताया कि घर पर उस की अकेली बूढ़ी माँ है। उसे उसकी इतनी चिन्ता हुई कि वह भागने पर बाधित हो गया। नेपोलियन माता के प्रति उसकी चिन्ता तथा कर्तव्य बोध से इतना प्रभावित हुआ कि उसे न केवल क्षमा किया अपितु उसके घर जाने का भी पूरा प्रबन्ध किया। हमें पश्चिम की नकल कर माता–पिता के प्रति तिरस्कार का व्यवहार नहीं करना चाहिये। माता–पिता के ऋण से मुक्त कभी नहीं हुआ जा सकता। यही हमारी संस्कृति है। माता–पिता की सेवा करना हमारा कर्तव्य ही नहीं धर्म भी है। पश्चिम की अच्छी बातों की नकल करना कोई बुरी बात नहीं है। परन्तु हर बात में आंखें मून्दकर अनुकरण करना ठीक नहीं।

सम्बन्ध-कितने आत्मीय, कितने गहरे ?

♦सुकामा आर्या, अजमेर

हमारे सम्बन्ध कई प्रकार के होते हैं। बचपन से लेकर आज तक हम सम्बन्धों के सहारे ही जी रहे हैं। माँ–बाप, भाई–बहन से, सहपाठियों से, मित्रों से, सगे सम्बन्धियों से, विभिन्न स्तर के सम्बन्ध हमारे जीवन को चलाने में सहायक होते हैं। ईश्वर ने बड़ी अच्छी व्यवस्था कर रखी है कि समयानुसार परिस्थिति अनुसार हमारे सम्बन्ध बदलते रहते हैं या यूँ कहें कि इनका स्वरूप बदल जाता है। बचपन में जिस माँ के बिना जीवन सम्भव नहीं होता है–थोड़ा सम्भलते ही उसकी आवश्यकता कम होने लगती है। योवन आते–आते वह लगभग समाप्त ही हो जाती है। फिर नए सम्बन्ध बनते हैं–मित्रों के, सहयोगियों के, अध्यापकों के–ये हमारे ध्यानं का केन्द्र बन जाते हैं।

हम एक समय में, एक काल में जिस सम्बन्ध को पूरी निष्ठा से निभाते हैं, कालान्तर में उसे उतनी निष्ठा से नहीं निभा पाते हैं। क्योंकि परिस्थितियाँ बदल जाती हैं। जैसे विवाह के बाद व्यक्ति के जीवन में माँ–बाप, भाई–बहन के साथ–साथ पत्नी, बच्चों का भी दायित्व आ जाता है। उसे दोनों में सामञ्जस्य बिठाना होता है। अगर विवाहोपरान्त भी वह उसी प्रकार से माँ–बाप, भाई–बहनों से सम्बन्ध, घनिष्ठता रखे और पत्नी व बच्चों की उपेक्षा करे तो ये न्याय संगत नहीं होगा। जो व्यक्ति समय व परिस्थितियों के अनुसार बदलते नहीं हैं–वे जीवन की दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

अगर उबलते हुए पानी के बर्तन पर ढीले ढक्कन को जोर से दबाएंगे तो विभिन्न दिशाओं से भाप बाहर निकलेगी ही, दबाव से किसी परिस्थिति को हम केवल कुछ समय के लिए रोक सकते हैं, हमेशा के लिए नहीं। ऐसे ही अवांछित अधिकार व दबाव से हम सम्बन्धों में स्वयं ज़हर घोल लेते हैं। उचित दूरी व घनिष्टता में सामञ्जस्य बिठाना होता है। सम्बन्ध बनाए रखने के लिए दो मूलभूत आवश्यकताएँ हैं–संवाद व संवेदनशीलता। बुजुर्ग कहते हैं :–

दिल मिले न मिले, हाथ मिलाते रहिए।

यानि बातचीत करनी नहीं छोड़नी चाहिए, या यूँ कहें कि अभिव्यक्ति नहीं छोड़नी चाहिए।

क्योंकि अगर जीवन में संवाद हट गया तो यकीनन वहाँ विवाद आ जाएगा जो हम किसी भी सम्बन्ध में नहीं चाहते हैं।

दूसरा पहलू है–संवेदनशीलता। हम अपने प्रति, अपने परिवार के प्रति, अपने पड़ोसी के प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, मानव मात्र, प्राणि मात्र के प्रति कितने संवेदनशील हैं यह हमारी सम्बन्धों की आत्मीयता का द्योतक है। यह हमारी संवेदनशीलता, हमें किसी भी परिस्थिति में मधुर सम्बन्ध बनाने में सहयोगी होती है। यह पंक्तियाँ संवेदनशीलता को ही चरितार्थ करती हैं –

दुःखिया पास पड़ा है तूने मौज उड़ाई तो क्या ?
भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई तो क्या ?

आज के वातावरण में हम संकुचित होते जा रहे हैं, मैं मेरा परिवार और बस। सबसे हमने दूरियाँ बना ली हैं, जो मुख्यतः वैचारिक व भावनात्मक स्तर पर हैं।

यूँ तो हम फास्ट टेक्नोलॉजी से चन्द्रमा तक जुड़ गए हैं, उपग्रहों से जुड़ गए हैं, पर हम स्वयं से, अपने परिजनों से मित्रों से दूर होते जा रहे हैं।

एक विशेष सम्बन्ध सबका होता है, निर्बाध रूप से, ईश्वर के साथ। ध्यान रहे, भले ही सारे सम्बन्ध छूट जाएँ, टूट जाएँ, विच्छेद हो जाएँ, ईश्वर के साथ सदा बना रहता है और बनाए रखना चाहिए। क्योंकि बाकी सम्बन्ध तो अल्पकालिक होते हैं, परिस्थिति वशात् होते हैं।

ये एक सम्बन्ध है जो बिना किन्हीं शर्तों के है। ईश्वर यह नहीं कहता कि क्योंकि तुम मेरी उपासना नहीं करते हो, मैं तुम्हें सांस लेने के लिए वायु नहीं दूँगा या तुम्हारे घर के अन्दर सूर्य का प्रकाश बाधित कर दूँगा। वह तो देवता है–सदा से देता आ रहा है, हमारे साथ अपनेपन का निर्वाह अनादिकाल से कर रहा है। हमारे में ही उस तड़प की कमी है जिसके अभाव में हम उससे सीधे सम्पर्क, सम्बन्ध नहीं बना पाए हैं।

'कभी ए हकीकत–ए–मुंतजिर, नज़र आ मिज़ाज ए लिबास में, कि हज़ारों सजदे तड़ रहे हैं, तेरे इक ज़बीने नियाज़ में।'

हमें इस सम्बन्ध को दृढ़ व सुमधुर बनाने के लिए सतत प्रयास करना चाहिए। जैसे घर में एक मेहमान के बैठे होने पर, दूसरा कोई उससे विशिष्ट व्यक्ति आ जाता है तो तुरन्त हमारा ध्यान उस तरफ चला जाता है, क्यों, क्योंकि वह व्यक्ति विशेष है, उसकी महत्ता ज्यादा है। इसी तरह ईश्वर भी पुरुष विशेष है। उसका महत्त्व दुनिया की प्रत्येक वस्तु से अधिक है, तो हमें उसको अपना बनाने के लिए तीव्र प्रेम व उत्साह से उपासना करनी चाहिए। यूँ भी

'एक के साधे, सब सधे।'

यह बात पूर्णतया ईश्वर पर चरितार्थ होती है। जब किसी देश के राष्ट्रपति के साथ समझौता हो जाता है तो उस जनता का स्वयमेव ही हो जाता है। जिसका ईश्वर से सम्बन्ध बन गया है। मुख्य को जिसने साध लिया है तो

उसके गौण सम्बन्ध स्वतः ही सुधर जाएंगे। जितनी–जितनी ईश्वर से घनिष्ठता बढ़ेगी उतनी–उतनी जीवन में शान्ति, सौम्यता, सरलता आती जाएगी। ईश्वर के साथ जब सम्बन्ध को दृढ़ता से समझेंगे तब कई दुविधाओं के, आक्रोश के, द्वेष के बादल स्वयं छट जाएंगे। मन शान्त होगा, स्थिरता आएगी।

और यूँ भी ईश्वर से तो हम कोई भी सम्बन्ध बना सकते हैं, माता का, पिता का, बन्धु का, गुरु का, किसी भी रूप में ईश्वर को ले सकते हैं। जिस सम्बन्ध को दुनिया में अत्यन्त प्रेम से निभाया हो, वह सम्बन्ध ईश्वर के साथ सहजता से बनाया जा सकता है। हम अपनी सारी भावनाएँ, हृदय के उद्‌गार उसे बता सकते हैं दुनिया के सम्बन्ध तो एक बड़ी सी कोष्ठक में बंधे हुए मिलते हैं। समय की, समाज की, स्थान की सीमाओं को बांध दिया है। पर ईश्वर तो सर्वव्यापक है, अनन्त है।

वह उस शीतल, शान्त, सौम्य जल की तरह है जिसे जिस मर्ज़ी बर्तन में, सांचे में ढाल लो। इतनी स्वतन्त्रता, कोई भी दुनिया में सम्बन्धी नहीं देता है।

सो ईश्वर से ही प्रार्थना है कि प्रभु मैं तेरे साथ सम्बन्धित हो जाऊँ, तेरा हो जाऊँ, तू तो हमेशा से मेरे साथ है, मेरे अन्दर है। कमी तो मेरे पक्ष में है, आँख मून्द कर अपने हृदय कोश में मैं तुम्हें पा लूँ यही तड़प है, यही इच्छा है, मेरा यह प्रेम सार्थक हो जाए, मेरा यह जीवन सफल हो जाए, दुनिया से वैराग्य ले के तेरे साथ मेरा विशेष राग हो जाए।

'उल्टी ही चाल चलते हैं, आबार गाने इश्क
आंखों को बन्द करते हैं, दीदार के लिए।'

महर्षि दयानन्द

♦सुश्री गीता धनवानी, अजमेर

वे सूर्य के समान प्रकाश पुन्ज बनकर इस युग में अवतरित हुए। वे परहित जीये, मानवता को सन्मार्ग पर लाने के लिए उन्होंने एक नया दृष्टिकोण दिया। चन्द्रमा के प्रकाश की तरह रात्रि का अन्धकार दूर किया। उस घोर अन्धकार के युग में समाज में व्याप्त कुरीतियों का निराकरण अपने उपदेशों द्वारा व ग्रन्थों द्वारा किया। सत्य के अर्थ को प्रकाशित करने सत्यार्थ प्रकाश जैसे अमूल्य साहित्य का सृजन किया। स्वामी दयानन्द परोपकार की एक ऐसी मिसाल थे कि आज भी उनकी देह न होने के उपरान्त भी जनकल्याण, समाज कल्याण, नारी सम्मान के प्रयत्न हमारे बीच में विद्यमान हैं।

उस तेजस्वी पुरुष ने समाज को बदलने का अथक प्रयास किया। नारी को उन्होंने विशेष दर्जा देते हुए उनके अधिकारों की रक्षा की। नारी शिक्षा व विधवा विवाह का प्रचलन किया। आर्य समाज के रूप में क्रान्तिकारी संस्था का निर्माण किया।

उनके महान् कार्यों को देखें तो हम ऋण को उतारने में आज तक समर्थ नहीं हुए। हमें उनके विचारों को कार्यरूप में परिणीत करते हुए, उनके सपनों को साकार करना होगा। उनसे प्रेरणा लेते हुए आज के युग में जो चुनौतियाँ हैं उनको स्वीकार कर हमें उनके बताये मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। दुःख, कष्टों से नहीं घबराना चाहिए। हमें रूढ़ियों को तोड़कर नवसमाज का निर्माण करना चाहिए। इसके लिए सभी को संगठित होकर लक्ष्य की तरफ बढ़ना चाहिए। मानव अधिकारों की रक्षा करते हुए हमें ऐसे समाज का निर्माण करना चाहिए जिसमें शान्ति, प्रेम व भाईचारे का समावेश हो। अन्त में मैं यही कहूंगी–

लफ्ज बयां नहीं कर सकते, उनके उपकार शब्दों में आ नहीं सकते।
यादों में अमिट हैं वे अब तक, उनके कदमों के निशां मिटा नहीं सकते।

वेद सबसे पुराना ग्रंथ

♦अश्विनी कुमार पाठक, नई दिल्ली

वेद का ज्ञान किसी एक समुदाय के लिये नहीं है यह सब मुनष्यों के लिये है। गायत्री मन्त्र में ईश्वर से यह प्रार्थना की गई है कि वह हमारी बुद्धियों को ठीक मार्ग पर चलाये। वेद उपदेश से ही संसार में सुख और शान्ति हो सकती है। मनुष्यों में कोई स्वाभाविक ज्ञान नहीं होता। बच्चा चाहे कितना बड़ा हो जाये बिना सिखाये अथवा पढ़ाये लिखाये उसे कुछ नहीं आयेगा इसलिये किसी सिखाने वाले की आवश्यकता होती है जो माता–पिता और अध्यापक अथवा गुरू द्वारा पूरी की जाती है इसलिये सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार सदियों द्वारा वेद का ज्ञान दिया इसलिये उसे गुरूओं का भी गुरू कहा गया है। 'सः गुरुणाम अपि गुरु' वेद में सब मनुष्यों के सुखी रहने की प्रार्थना के मन्त्र हैं किसी एक व्यक्ति के लिये नहीं हैं। हम सब का भला चाहते हैं। इसलिये आर्य समाज को वेद का प्रचार करते रहना चाहिये डी.ए.वी. द्वारा अपनी संस्थाओं में विद्यार्थियों को धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा भी दी जाती है जो बड़ी अच्छी बात है। हम सब को अपना धर्म वैदिक ही लिखना चाहिये तभी सब विद्यार्थी पढ़ने के बाद आर्य बने रहेंगे क्योंकि हिन्दु तो कोई धर्म नहीं है। हिन्दुस्तान में रहने के कारण ही हम हिन्दु भी कहाते हैं। कोई माने चाहे न माने हम सब के पूर्वज पहले आर्य ही कहाते थे। सब मतमतान्तर तो कुछ समय से ही चले हैं। निम्नलिखित चार लाईन सब को याद रखनी चाहिये।

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म, ओम् हमारा ईश्वर है, यज्ञ योग हमारा कर्म, भारत हमारा देश है, सदा रहे स्वतंत्र, सत्य हमारा लक्ष्य है 'गायत्री महामंत्र।'

'पुनर्जन्मः सिद्धि व लाभ'

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

वैदिक धर्म की सभी मान्यताएं वैज्ञानिक हैं व इनका आधार सत्य, युक्ति व प्रमाण हैं। पुनर्जन्म उनमें से एक विशेष तथ्यात्मक मान्यता है। धीरे–धीरे वैदिक धर्म आर्यावर्त से बाहर भी गया था तथा उसकी पुनर्जन्म सम्बन्धी मान्यता की सर्वत्र स्वीकृति प्राप्त रही है परन्तु आज इसे आर्यावर्त में उत्पन्न हुए मतों व शुद्ध वैदिक धर्मियों के अतिरिक्त कोई नहीं मानता। इस के विरोध के स्वर भी कभी भारत से उठे थे जब चार्वाक दर्शनकार ने घोषणा की थी :

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनार्गमनं कुतः।।

अर्थात् जब तक जिओ, अच्छी मस्ती में जिओ, सुखपूर्वक जिओ। यदि तुम्हारे पास धन नहीं है तो भी निश्चित होकर किसी दूसरे व्यक्ति से ऋण लेकर खाओ–पिओ करो। इस बात की चिन्ता मत करो कि ऋण कैसे उतारोगे क्योंकि यह एक जीवन व्यतीत करके जब जाओगे तो तुम्हारा शरीर तो भस्म होगा परन्तु मुड़कर फिर तुमने आना नहीं है। ऋण कौन चुकाएगा ? किसकी चुकाओगे ? ऋण लेने वाला बचेगा तथा न ही ऋण देने वाला ही होगा।

Eat, drink and be merry का पश्चिमी सिद्धांत चार्वाक दर्शन का ही अंग्रेज़ी अनुवाद है और हम कह सकते हैं कि कभी यह भारतवर्ष जगत्गुरू रहा है तो जगत् को भोगी–विलासी बनाने का प्रारम्भ भी हमारे ही देश ने किया था।

आवागमन का सिद्धान्त अत्यन्त प्राचीन है। एक ऐसा समय भी था, जब सम्पूर्ण संसार इसे स्वीकार करता था। चीन, यूनान, मिश्र, ईरान, रोम, मैक्सिको, अमरीका, अरब, रूस व आस्ट्रेलिया के निवासी भी पूर्णतः इसे मानते थे। यह तबकी बात है, जब संसार में प्रेम व शान्ति का सम्पूर्ण जगत् पर साम्राज्य था। बरेली में सन् १८७६ ईस्वी में पादरी टी.जी. स्काट ने भी इन शब्दों में इस तथ्य को स्वीकार किया है– "प्राचीन मिश्र वालों ने इसको मान लिया। इसी प्रकार यूनानियों ने, रूमियों ने और अंग्रेजों ने तभी हमारे पुराने द्रविड़ लोग जो हमारे गुरू थे, यही सिखाते थे और हम लोग सबके सब मानते थे।"

रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका के अनुसार ईस्वी सन् ५४३ ई. में अस्तंबोल में तत्कालीन पोपों की एक बैठक हुई थी जिसमें यह निर्णय लिया गया था कि भविष्य में वे पुनर्जन्म को नहीं मानेंगे परन्तु उनकी यह घोषणा १३वीं–१४वीं शताब्दी से डगमगाने लगी है। ईसाई पादरी तब दान लेकर दानदाताओं को एक हुण्डी लिख देते थे कि इस व्यक्ति ने यहाँ इतना दान दिया है, अतः यह मृत्यु के पश्चात् जब कब्र से उठेगा तो इसे HEAVEN अर्थात् स्वर्ग में स्थान सुविधाएँ दी जाएं। इसी प्रकार इस्लाम मतानुयायी कहते हैं कि बहिश्त अर्थात् स्वर्ग में जाने वालों को हूरें (अप्सराएं) व शराब की नदियाँ मिलेंगी, वे कब्रों से कयामत के दिन उठेंगे क्योंकि मुहम्मद पर ईमान लाते हैं। यह परोक्षतः पुनर्जन्म होने की स्वीकृति ही हैं क्योंकि बिना नया शरीर प्राप्त किए कोई भी आत्मा पदार्थों का सेवन कर ही नहीं सकती। आत्मा व शरीर का संयोग ही तो जन्म है। इसके बावजूद कुछ विधर्मी व नास्तिक बड़े हठ पूर्वक यह घोषणा करते हैं कि पुनर्जन्म होता नहीं। होता है तो हमारे प्रश्नों के उत्तर दो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुनर्जन्म सम्बन्धी उन लोगों के प्रश्नों के उत्तर बड़ी कुशलता व सफलता से "सत्यार्थ प्रकाश" के नवम समुलास, "ऋग्वेदादि भाषय भूमिका" व "उपदेश मंजरी" में देने का प्रयास किया है, जो लोग पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते। इसके अतिरिक्त बलिदानी पं. लेखराम जी ने "कुलियात आर्य मुसाफिर" के दोनों खण्डों में इस विषय में उठाई शंकाओं का प्रामाणिक समाधान किया है। इस निबन्ध द्वारा हम कुछ समाधानों की चर्चा कर रहे हैं। पुनर्जन्म सम्बन्धी सबसे बड़ा प्रश्न यह किया जाता है कि वर्तमान जन्म में हमें पिछले जन्मों की स्मृतियाँ रहती नहीं ? महर्षि का उत्तर यह है कि इस व्यवस्था में ईश्वर की महती कृपा है कि पिछले जन्मों की स्मृतियाँ नहीं रहतीं। हमें वर्तमान जीवन के आरंभिक पांच वर्षो तक की घटनाएं स्मरण नहीं रहतीं क्योंकि जीव अल्पज्ञ है, त्रिकालदर्शी नहीं, इसलिये स्मरण नहीं रहता। पूर्व जन्म की बात दूर रही, इसी जीवन में जब जीव माँ के गर्भ में था, तब की कोई भी बात हमें स्मरण नहीं रहती। इसी में जीव व जगत् का सुख निहित है।

मैं अनेक बार चक्रवर्ती बना हूँ तो कभी भिखारी बनकर भी जीवन–निर्वाह करना पड़ा है। किसी जीवन में दान दाता रहा हूँ तो कभी मैं चोर भी रहा हूँ। यदि मुझे वे घटनाएं स्मरण आ जाएं तो वर्तमान जीवन में कभी ग्लानि में डूब जाता तो कभी के अहंकार में लीन रहता। यदि में दूसरे लोगों को बताता कि मैं पिछले किसी जन्म में चक्रवर्ती राजा था तो वे मेरे कथन पर हंसते व कहते–चल, चल, झूठ मत बोल। यह मुँह और मसूर की दाल!" यदि उन्हें पता चलता कि मैं चोरी भी करता रहा हूँ तो वे व्यंग्य व परिहास करते व संसारजनों को कहते कि इस व्यक्ति से सावधान रहो।"

हमें पिछली घटनाएं स्मरण नहीं रहतीं, इसी में सुख है। वस्तुतः यह ईश्वर का बड़ा वरदान है। ईश्वर हमारी स्मृतियों को छीन कर हम पर बहुत बड़ी कृपा करता है। पिछले जन्मों की स्मृतियों को लेकर जीव अतीतगामी ही बना रहेगा, वह भविष्यगामी नहीं बनेगा। किसी विशेष घटना पर से जिसका मस्तिष्क रूक जाता है, वह पागल हो जाता है। किसी पागल से मिलकर देखिए—वह अपनी किसी घटना को ही स्मरण करता रहता है, दोहराता रहता है। वर्तमान का आभास उसे नहीं होता, भविष्य की कोई योजना उसकी बुद्धि में नहीं आती। बाधा हटाए बिना यात्रा सुगम व सरल नहीं बनती। अतीत की गांठ बांधना हमें आगे बढ़ने में बाधक हैं, यह मनो वैज्ञानिकों का विचार है।

एक आक्षेप यह किया जाता है कि यदि हम पुनर्जन्म को मानेंगे तो हम चरित्रहीन व ईश्वर चरित्रहीनता को बढ़ावा देने वाला सिद्ध होता है। यह आक्षेप आगरा में सन् १८८० ई. में मौलवी तुफ़ैल अहमद ने महर्षि दयानन्द के समक्ष रखा था। महर्षि ने पूछा था—''वह कैसे ?''

''एक व्यक्ति मर गया। इस जन्म में जो उसकी बेटी है, सम्भव है कि अगले जन्म में वही उसकी पत्नी बन जाए तो उससे सम्बन्ध बनाने से वह चरित्रहीन बनेगा।''

''बाप व बेटी का सम्बन्ध शरीर का है, आत्मा का नहीं। एक आत्मा का दूसरी आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसलिए यह आक्षेप आत्मा पर लागू नहीं होता।''

ईश्वरीय व्यवस्था को ठीक समझने पर ही यह ज्ञान हो जाता है कि एक आत्मा का सम्बन्ध दूसरी आत्मा से शरीर के कारण व माध्यम से ही है। अन्यथा कि आत्मा किसी दूसरी आत्मा का न पिता है, न पुत्र तथा न ही पति या पत्नी। आंख बंद होते ही समस्त लौकिक व शारीरिक सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं, expire हो जाते हैं। अतः यह आक्षेप व्यर्थ है।

एक आक्षेप यह किया जाता है कि पाप दुष्कर्म है तो मनुष्य करता है परन्तु आगामी जीवन में इनका फल पशु—पक्षी की मिलता है तो यह ईश्वर का अन्याय है। मनुष्य के पापों का दण्ड भी उसे ही मिलना चाहिए। घोड़े, गधे या सुअर को दण्ड देना ईश्वर का न्याय नहीं है। इसका उत्तर यह है कि प्रश्नकर्त्ता को यह ज्ञान हो नहीं है कि कर्मों का कर्त्ता कौन है व उनका फल भोक्ता कौन है। वास्तविकता यह है कि कर्मों का कर्त्ता जीवात्मा है व फल का भोक्ता भी वही है। जीवात्मा मनुष्य है तथा न ही घोड़ा, गधा या सुअर जीवात्मा है। जिस—जिस योनि में जीवात्मा जाता है, उस उसके आधार पर उसका वैसा नाम हो जाता है। मनुष्य योनि ही कर्म—योनि है तथा उस योनि में कर्म करने पूर्ण स्वतन्त्रता होने के कारण उस योनि में रहने वाले जीव को कुछ भी कर्म का अधिकार है, छूट है। यदि तब वह पाप/दुष्कर्म करता है तो दण्ड देने तथा सुधार करने के उद्देश्य से उसे फलस्वरूप परमात्मा पशु—पक्षियों की किसी योनि में भेजता है। वहाँ वह नये पाप/दुष्कर्म करने के अधिकार और अवसरों से वंचित हो जाता है। पाप करने के साधन, अवसर व अधिकार केवल मनुष्य शरीर में ही उपलब्ध हैं। मनुष्य शरीर ही पाप—कर्म करने का साधन है, अन्य कोई शरीर नहीं। जिस प्रकार एक हत्यारा निर्दोष की अपनी बन्दूक से हत्या करता है तो न्यायाधीश बन्दूक को दण्ड न देकर उसे ही देता है, इसी प्रकार मनुष्य शरीर में पाप करने जीव को ही दण्ड स्वरुप घोड़े, गधे या सुधर की योनि में ईश्वर भेजता है। स्पष्ट है कि दण्ड तो जीव को ही मिलता है, शरीर को नहीं। शरीर साधन मात्र है। आत्मा व शरीर का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। जीव शरीर के बिना निष्क्रिय है तथा शरीर जीव के बिना व्यर्थ है। मनुष्य शरीर में रहा है जीव पुण्य कर्मों का फल भोगने की इच्छा रखकर पुण्य कर्म करेगा तो निश्चितः उसे फल स्वरूप पुनः मनुष्य योनि मिलेगी। इसके विपरीत कर्म करेगा तो पशु योनि में भेजकर उससे पाप करने का अभ्यास छुड़ाया जाता है तथा कालान्तर में उसे ही पुनः मनुष्य योनि में लाया जाता है। यह परमात्मा की जीव के सुधार, पाप—मुक्ति व कल्याण की दिव्य तथा अनुपम व्यवस्था है, न कि यह अन्याय है। विपक्षियों की ओर से एक आक्षेप यह किया जाता है कि जीवों द्वारा मनुष्य योनि में रहकर किए दुष्कर्मों पापों का फल देने व जीवों के सुधार हेतु उन्हें पशु—पक्षी व कीट पतंगादि योनियों में ईश्वर द्वारा भेजना लाभदायक नहीं है क्योंकि उन्हें यह सूचना—जानकारी ही नहीं मिलती कि उन्होंने कौन—से दुष्कर्म किये थे, जिनके फलस्वरूप उन्हें निम्न योनि में जन्म मिला है। जब दुष्कर्मों का ज्ञान ही जीव को न होगा तो वह सुधार—परिष्कार व उनसे बचाव कैसे करेगा ? उस प्रश्न का उत्तर महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के नवम समुल्लास में इस प्रकार दिया है :

(उत्तर) तुम ज्ञान कै प्रकार का मानते हो ?

(प्रश्न) प्रत्यक्षादि प्रमाणों से आठ प्रकार का।

(उत्तर) तो जब तुम जन्म से लेकर समय—समय में राज, धन, बुद्धि, विद्या, दारिद्रय, निर्बुद्धि, मुर्खता आदि सुख—दुःख संसार में देखकर पूवर्जन्म का ज्ञान क्यों नहीं करते ? जैसे एक अवैद्य और वैद्य की कोई रोग हो, उसका निदान अर्थात् कारण वैद्य जान लेता है और अविद्वान् नहीं जान सकता।

—शेष भाग अगले अंक में

हमारा मन एक समय में एक ही काम कर सकता है

♦नीला सूद, चण्डीगढ़

अभी कुछ समय पहले मैं अपने भाई के पास गई हुई थी। उनका लड़का व बहू भी वहीं थे। हम सब खाना खा रहे थे। मेरा भतीजा खाना खाने के साथ अपने छोटे बच्चे के साथ खेल रहा था। इतने में उसके स्मार्ट फोन, जो कि हर समय उसके साथ ही रहता था, घंटी बजी। वह एकदम खाने की जगह से उठा, खाने की प्लेट एक हाथ में, बच्चा हाथ में और सैल फोन कन्धे और मोड़े हुए सिर की बीच में दबाकर बात करनी शुरू कर दी। बात लम्बे समय तक चली। उसके बाद जब वह सोफे पर बैठा तो मेरी भाभी ने उस से पूछा 'बेटा खाना कैसा लगा ?' 'मम्मी सच बतलाऊँ मुझे बिल्कुल पता नहीं मैंने क्या खाया।'

यह बात उस लड़के की ही नहीं। हमारे में अधिकतर एक ही साथ बहुत से कार्य करने की कोशिश करते हैं। एक ही साथ बहुत से कार्य करना आज के युग में सफलता का राज माना जा रहा है। हम गाड़ी चलाते–चलाते मोबाइल पर फोन करते हैं और सुनते भी हैं। खाना खाते हुए टेलिविज़न भी देखते हैं। जब भगवान की पूजा कर रहे होते हैं तो मन कहीं और ही घूम रहा होता है। हमारी तो बात छोड़ो जब हमारे धार्मिक गुरु प्रवचन दे रहे होते हैं, तो उसकी एक नजर अपने आगे रखे हुये फोन पर होती है। जैसा कि मेरे पति कहते हैं एक ही ऐसा समय आता है जब कि हमारा मन एकाग्रचित होता है और वह है जब हम नोट गिन रहे होते हैं।

आज की पीढ़ी की यह बहुत ही गलत सोच है कि हम एक समय में बहुत सारे काम कर सकते हैं। न्याय दर्शन कहता है कि मन एक समय में दो काम नहीं कर सकता। मन का विज्ञान कहता है मन जब एक इन्द्री के साथ जुड़ता है तो बाकी इन्द्रियाँ काम करना बन्द कर देती हैं। उदाहरण के लिये जब अचानक कोई मन को भाने वाली सुन्दर चीज हमारे सामने आती है तो केवल देखने वाली इन्द्री ही काम कर रही होती है और बाकी इन्द्रियाँ काम करना बन्द कर देती हैं। एक काल में अनेक ज्ञानों का उत्पन्न न होना मन का चिन्ह है। यही कारण है कि वाहन चलाते हुये मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिये। हो सकता है आप की सुनने की इन्द्री इतनी एकाग्र हो जाये कि बाकी इन्द्रियाँ कुछ समय के लिये बन्द हो जायें। ऐसे में दुर्घटना की सम्भावना बहुत अधिक हो जाती है।

महाभारत में पाण्डवों और कौरवों के गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्यों की धनुर्विद्या में परीक्षा लेने के लिये एक घूमती हुई मछली की मूर्ति को ऊपर कुछ दूरी पर रख देते हैं। शिष्यों को पानी में मछली की परछाँई देखकर निशाना लगाना होता है। निशाना लगाने से पहले हर एक शिष्य को गुरु द्रोणाचार्य के इस प्रश्न का जवाब देना होता है कि वह क्या देख रहा है। अर्जुन को छोड़ कर बाकी शिष्यों का जवाब था...मैं मछली को देख हूँ। परिणाम वे निशाना न लगा सके। अर्जुन का जवाब था...गुरु देव मैं केवल मछली की आंख देख रहा हूँ और उसका निशाना सही गया।

हम सब अपने आप को धोखा देते हैं जब यह सोचते हैं कि हम एक ही समय में बहुत सारे काम कर सकते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि जब हम बहुत सारे काम एक साथ करने की सोचते हैं तो एक भी कार्य ठीक से नहीं कर सकते, और कई बार नकुसान अधिक हो जाता है। सड़कों पर तेजी से बढ़ती दुर्घटनायें इसका उदाहरण हैं।

अच्छा होगा हम न्याय दर्शन की इस बात को ध्यान में रखें कि हमारा मन एक समय में एक ही काम कर सकता है।

क्या कहते हैं हमारे वेद शास्त्र 'मन' के लिये

हमारे मन में आने वाले विचार ही हमारे जीवन को दिशा प्रदान करते हैं व हमारे चरित्र का निर्माण करते हैं। शरीर स्वस्थ भी हो मगर यदि मन पवित्र नहीं तो व्यक्ति अपने लक्ष्य से भटक जायेगा। मन ही इन्द्रियों तथा आत्मा को लीन करने वाला है। इसलिए मन का बहुत महत्व है। मन की शक्ति को पहचानकर इसे ठीक रास्ते पर डालने की आवश्यकता है। कैसा हो हमारा 'मन' इस बारे में यजुर्वेद में कहा है:–

"जैसे अच्छा सारथी घोड़ों को लगाम लगाकर अपने नियन्त्रण में रखता है, उसी प्रकार वश में किया हुआ मन मनुष्य को अच्छे व इच्छित स्थान पर ही ले जाता है। जो मन हमारे हृदय में वास करता है, कभी बूढ़ा नहीं होता, सबसे तीव्र गति से भागने वाला है, हे प्रभु ! वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।"

"जिस मन के अन्दर ज्ञान–शक्ति, चिन्तन शक्ति, धैर्य शक्ति रहती है, जो मन अमृतमय व तेजमय है, जो इतना शक्तिशाली है कि इसके बिना मनुष्य कोई भी कर्म नहीं कर सकता है, प्रभु वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।"

"जो दिव्यगुणों वाला मन जागते तथा सोते समय दूर–दूर चला जाता है, जो दूर जाने वाला, ज्योतियों का प्रकाशक ज्योति है, हे प्रभु! वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।"

गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं..."निःसंदेह मन का वश में करना बहुत कठिन है, मन चंचल है, किन्तु हे कुन्ती पुत्र! मन अभ्यास व वैराग्य द्वारा वश में किया जा सकता है।"

उत्कृष्ट शंका समाधान

♦स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, रोजड़, गुजरात

शंका–सृष्टि (जगत्) में सभी जीव, परमात्मा के लिए संतानवत् है तो परमात्मा प्राकृतिक प्रकोप के द्वारा क्या दर्शाना चाहता है–दयालुता या न्यायकारिता ? कई जीव पृथ्वी पर पैर रखते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा क्यों ?

समाधान–प्रश्नकर्त्ता ने पूछा है कि इससे ईश्वर अपनी दयालुता दिखाना चाहता है या न्यायकारिता। इसका अर्थ कहीं न्यायकारिता हो सकता है और कहीं यह हो सकता है कि भगवान ने पहले ही कह रखा था कि दुर्घटना से बच के चलना।

एक इंजीनियर ने कार बनाकर इससे सम्बन्धित पूरा विवरण बुकलेट में छापकर खरीददार को दे दिया। खरीददार को बता दिया गया कि पहले बुकलेट पढ़नी है और इसको समझ के फिर कार का इस्तेमाल करना है।

बुकलेट में पहले से ही यह सूचना दे रखी है कि जब कार का इंजन स्टार्ट होगा तो इंजन में गर्मी बढ़ेगी। और जब गर्मी बढ़ेगी तो उसके रेडिएटर में कूलेन्ट डालकर रखना, उसका इंजन ठंडा रखना और मीटर पर देखते रहना कि कितना तापमान है ? पेट्रोल इंजन में अगर सौ डिग्री से ऊपर तापमान गया, तो इंजन में आग लगेगी।

कार चलाने वाला व्यक्ति कूलेंट तो डाले नहीं, रेडिएटर को चेक करे नहीं, मीटर देखे नहीं कि तापमान कितना बढ़ रहा है, इस अवस्था में अगर कार में आग लगती है, तो इसमें किसका दोष है ? यह ड्राइवर और कस्टमर का दोष। कार बनाने वाले इंजीनियर का दोष तो नहीं है।

इसी प्रकार से भगवान ने जब यह सृष्टि बनाई, तो उसने कहा–इस सृष्टि के अंदर भूकंप, तूफान, आंधी, सूनामी, टोरनेडो जैसी कई प्राकृतिक विपदाएं आने की सम्भावना है। आपका काम है–सावधानी से चलते रहना। पता लगाना हमारा काम है कि कहाँ तूफान आ सकता है, कहाँ भूकंप आने वाला है, कहाँ बाढ़ की स्थिति बन सकती है, फिर उससे बच के रहना। अगर हम ध्यान न दें तो किसकी गलती, हमारी या ईश्वर की ? हमारी गलती। इसलिए ईश्वर पर दोष नहीं आता है।

हमारा काम है, दुर्घटनाओं से बचना। जब हम सड़क पर चलते हैं तो मोटर गाड़ी से बचकर चलते हैं। ऐसे ही संसार में रहते हैं तो प्राकृतिक दुर्घटनाओं से बचकर चलते हैं। दो–चार साल में, पाँच साल में, बीस साल में वो सफल हो जाएंगे। पहले पता लग जाएगा कि कहाँ भूकंप आने वाला है और कितनी तीव्रता से आएगा। चौबीस घंटे पहले भूकंप का पता लग गया तो ठीक है, अपनी जान बचा के भाग जाएंगे। सोए हुए हैं और रात को एक बजे भूकंप आएगा, तो मरेंगे ही। यदि पहले पता लग जाए कि रात को एक बजे भूकंप आएगा तो लोग बाहर भाग जाएंगे या मकान से बाहर सोएंगे, मकान में नही सोएंगे।

इस प्रकार से अपनी रक्षा करना हमारा काम है। भगवान ने इसलिए तो बुद्धि दी है कि सावधानी से चलो। इसीलिए तो कहा जाता है कि–मनुष्य जन्म प्राप्त किया है, तो संसार में पड़े–पड़े दुःख मत भोगो। समाधि लगाओ, शास्त्र पढ़ो, समाज की सेवा करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में चले जाओ।

दूर कर अज्ञान सारा, विज्ञान हमको दीजिए

♦पं. वेद प्रकाश शास्त्री, फाजिल्का

हे प्रभो! आनन्द सिन्धो! दया सभी पर कीजिए।
दूर करके अज्ञान सारा, विज्ञान हमको दीजिए।
हे प्रभो!....

कीजिए ऐसा अनुग्रह, हम पे हे परमात्मा।
हों बाल इस सभा के सबके सब शुभात्मा।
मन हो जाय निर्मल, सद्ज्ञान हमको दीजिए।।२।।
हे प्रभो!....

आलस्य से दूर रह कर, सदा बनें पुरुषार्थी,
रहें राष्ट्र सेवा में तत्पर, हम सभी शिक्षार्थी।
देशभक्ति से भरपूर हों, शक्ति ऐसी दीजिए।
हे प्रभो!....

सीखें सद्गुण गुरुजनों से और सुपथ पर चलें।
छोड़ देवें वैर सारे, प्रेम से सबको मिलें।
काम भलाई का करें, उपकार–बुद्धि दीजिए।
हे प्रभो!....

अच्छे कर्मों को करके, यश–तेज–बल धारण करें।
मात–पिता की पा के आज्ञा, तहे–दिल से पालन करें।
'वेद' की शिक्षा नित मिले, हे ईश! किरपा कीजिए।।
हे प्रभो!....

उदगार

हम आज में रहते हैं। आज में ही रहेंगे और इस नश्वर शरीर को भी आज ही को सौंप कर सदा और सर्वदा के लिये विदा हो जायेंगे। ना मालूम इस देह को अग्नि में जलाया जायेगा या जमीन में दफनाया जायेगा अथवा पशु–पक्षियों के लिये पारसी धर्म के अनुसार उनका निवाला बनना होगा। जिसे हमने देखना ही नहीं, उससे डर कैसा और क्यों ? हमारे ऋषि–मुनियों तथा वेद शास्त्रों ने उस परम नायक और विश्व विधायक परम पिता को अपने अंग–संग और रोम–रोम में व्यापक माना जाना और समझा। भक्त तो भगवान से स्वर्गीय श्री नन्द लाल भजनीक के शब्दों में यही लिखा जाता और प्रेममय होकर श्रद्धा से हुंकार भरता हुआ कह उठता है :–

जगत् जननी माँ हमें तेरा ही सहारा
तेरे सिवा और कोई नहीं हमारा, भव से कर दो पार
नमस्कार, नमस्कार।

भक्त की कामना केवल मात्र प्रभु चरणों में रहकर आत्मोद्धार की रहती है। वह कह उठता है :–

कहे नन्दलाल सबकी आत्मा पवित्र हो
देह हो निरोग और ऊंचा चरित्र हो, वेद के अनुसार

–सम्पादक

वेद का सन्देश

♦महेन्द्र आर्य, मुम्बई

ओम् अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्त रादधरादभयं नो अस्तु।।
ओम् अभयं मित्रादभयम मित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरोयः।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।
–अथर्व. (का. १९, सू. १५, ऋ. ५,६)

भय रहित जीवन रहे, यह कामना है।
हर समय प्रभु, हाथ तेरा थामना है।।
डर न हो हमको, किसी भी बात का,
ज्ञात का या फिर, किसी अज्ञात का।
मित्र से डर हो, न हमको शत्रु से,
दिवस का डर हो, न काली रात का।।
भय के ऊपर हो विजय, यह चाहना है।
हर समय प्रभु! हाथ तेरा थामना है।।
ना डरें हम तो किसी भूचाल से,
ना डरें आकाश से, पताल से।
डर हमें ना हो, दिशाओं से कभी,
डर न हो हमको ग्रहों की चाल से।।
भय से हों निर्भय, यही बस कामना है।
हर समय प्रभु! हाथ तेरा थामना है।।

संघ समाचार

♦**बल्ह खण्ड** : आज दिनांक २६ जून २०१४ को हिमाचल पैंशनर्ज कल्याण संघ बल्ह खण्ड की कार्यकारिणी की बैठक प्रधान मंगतराम चौधरी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में : श्री मंगतराम चौधरी–प्रधान, श्री देवी सिंह सैनी उप–प्रधान, श्री जयराम नायक–महासचिव, श्री खेमचन्द ठाकुर–जिला सलाहकार, श्री लालमन शर्मा–जिला उपाध्यक्ष सहित भारी संख्या में सेवानिवृत कर्मचारी सम्मिलित हुए।

सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया कि बढ़ा हुआ पैंशन भत्ता मूल वेतन में शामिल हो। चिकित्सा भत्ता ३५० से ५०० रु. पंजाब पैटर्न के आधार पर सुनिश्चित किया जाये। जनवरी १४ से मंहगाई भत्ता की देय किश्त यथा शीघ्र जारी की जाये।

–महासचिव, बल्ह खण्ड

♦**सुन्दरनगर खण्ड** : हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ सुन्दरनगर खण्ड की बैठक ३० जून २०१४ को खण्ड प्रधान श्री मोहन वर्मा की अध्यक्षता में जवाहर पार्क सुन्दरनगर में सम्पन्न हुई। उक्त बैठक में प्रदेश संरक्षक एवं जिला मण्डी के प्रधान श्री के. सी. आर्य, प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं नगर परिषद सुन्दरनगर की अध्यक्षा श्रीमती गिरिजा गौतम, जिला कोषाध्यक्ष श्री जय राम वर्मा, जिला संयुक्त सचिव श्री रमण कुमार गुप्ता, सचिव विनोद स्वरूप, कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मण सिंह के अतिरिक्त सुन्दरनगर खण्ड के पैंशनरों ने बैठक में भाग लिया। जिला मण्डी के महासचिव श्री भगत राम आजाद के त्याग–पत्र को स्वीकृत करते हुए अनुभवी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ, समर्पण की भावना से कार्य करने वाले श्री प्रभु राम वर्मा को जिला का महासचिव मनोनीत किया गया। सभी पैंशनरों ने करतल ध्वनि से प्रभु राम जी का स्वागत किया तथा श्री के. सी. आर्य और श्री मोहन सिंह ने फूलमालाऐं पहना कर वर्मा जी को बधाई दी। बैठक में निर्णय लिया गया कि जिला मण्डी की मीटिंग २५ जूलाई २०१४ शुक्रवार को वृद्धाश्रम आनन्दधाम, देहरी सुन्दरनगर में दिन के १०.३० बजे सम्पन्न होगी, जिसमें प्रदेशाध्यक्ष श्री रमेश भारद्वाज, मुख्य संरक्षक श्री बी. डी. शर्मा विशेष रूप से उपस्थित होंगे और पैंशनरों को सम्बोधित करेंगे तथा पैंशनरों की समस्याओं पर आगामी रणनीति पर विस्तार से चर्चा करेंगे। इस अवसर पर प्रीति भोज का भी आयोजन किया जायेगा।

–महासचिव, सुन्दरनगर

कन्या भ्रूण हत्या एक ऐसा पाप है जिसका कोई प्रायश्चित नहीं

♦कामता प्रसाद आर्य, बिहार

समाज में स्त्री–पुरुष राष्ट्र का एक अंग है विकास का एक महत्त्वपूर्ण सूचक है। नर तथा नारी किसी एक की कमी होने पर सृष्टि का कार्य नहीं चल सकता। महामहिम पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम ने अपनी वेदना व्यक्त करते हुए कहा है–''समाज एक पक्षी है और नर तथा मादा इस पक्षी के दो पंख है। यह पक्षी उड़ नहीं सकेगा यदि उसका एक पंख कतर दिया जाता है।'' आज हमारे देश में यह जघन्य अपराध हो रहा है। प्रसवपूर्व निदान तकनीकि चिकित्सा तंत्र की महत्वपूर्ण खोज है, किन्तु यह खोज लिंग जाँच का एक अपवित्र साधन बन गई है। यही कारण है कि भारतीय संसद को इस दुरुपयोग पर रोक लगाने हेतु प्रसवपूर्व निदान तकनीकि (विनियमन और दुरुपयोग निवारण) अधिनियम १६६४ पारित करना पड़ा। यह अधिनियम सम्पूर्ण देश में १ जनवरी १६६६ से निरन्तर लागू है। भारत सरकार ने उक्त अधिनियम में आवश्यक संशोधन करके दिनांक ४ फरवरी २००३ से गर्भधारण से पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (लिंग चयन प्रतिषेध) अधिनियम १६६४ रखा।

गर्भधारण पूर्व और प्रसवपूर्व निदान तकनीकि (लिंग चयन प्रतिषेध) अधिनियम १६६४ के अन्तर्गत गर्भ धारणपूर्व या बाद लिंग चयन और जन्म से पहले कन्या भ्रूण हत्या के लिए लिंग परीक्षण करना, करवाना, इसके लिए सहयोग देना व विज्ञापन करवाना कानूनी अपराध है, जिसमें उसे ५ वर्ष तक जेल व १० हजार से १ लाख रुपये तक जुर्माना हो सकता है।

सरकार द्वारा कानून बना दिया गया। क्योंकि सरकार कानून बनाने तक ही सीमित है। घोर अपराध हो रहा है, फिर भी सरकार के खुफिया तंत्र निष्क्रिय एवं अनजान हैं।

मानवता के नाते सोचें कि भ्रूण हत्या करना –करवाना मनुष्यवृत्ति है या निशाचरी प्रवृत्ति अजन्मा भ्रूण जो अभी विकसित भी नहीं हो पाया हो उसने क्या अपराध किया है ? जिसे जन्म से पहले माँ के गर्भ में मार दिया जाता है। अतः मानव समाज से निवेदन है कि अपने निजी स्वार्थ से हटकर सोचें कि हम क्या कर रहे हैं, इस कर्म से राष्ट्र का भविष्य क्या होगा ?

सिर्फ कानून बनाना सर्वोपरि नहीं है, कानून का पालन करना सर्वोपरि है। नैतिक चरित्रता के अभाव में दुष्कर्म हो रहा है, प्रमुख रूप से तीन जिम्मेवार हैं सृष्टि सन्तुलन को बरबाद करने वाले, एक गर्भवती का परिवार दूसरा डाक्टर, तीसरा कानून का रक्षक प्रशासन सरकार जब तक यह तीनों मानव धर्म नहीं निभाएगे तब तक यह शर्मनाक दुष्कर्म होता रहेगा, सृष्टि का सन्तुलन बिगड़ता ही रहेगा। यदि सच में मानव है तो सत्य को अपनाने में, असत्य को छोड़ने में ही मानव धर्म है।

असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय

साभार

श्री जय राम ठाकुर, गांव व डा. परवाड़ा, तह. चच्योट, जिला मण्डी ने ₹ २००, श्री खेम चन्द ठाकुर गांव भुरला, डा. जाच्छ, तह. चच्योट, जिला मण्डी ने ₹ २००, श्री सुखदेव गोस्वामी, भूतनाथ गली, नगरोटा बगवां, जिला कांगड़ा ने ₹ २००, श्री चन्दू लाल ठाकुर पूर्व अध्यापक अप्पर मोहल जिला कुल्लू ने ₹ २००, श्री गिरधारी लाल वर्मा, गांव व डा. सुक्कीबाई तह. चच्योट, जिला मण्डी ने ₹ १००, श्री ओम प्रकाश अत्री, लक्ष्मी नारायण गली, नगरोटा बगवां ने ₹ १००, श्री कार्तिक भटनागर, काईस्थवाड़ी रोड़ नगरोटा, बगवां ने ₹ १००, श्री माया राम पूर्व उपरेंजर गांव व डा. चुरढ़, तह. सुन्दरनगर ₹ १०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

निद्रा

♦महात्मा आनन्द स्वामी

''चिन्ताज्वरो मनुष्याणां निद्रां
क्षुधां तृषां हरेत्।''

जिसे चिन्ता की बीमारी लग जाती है उसे निद्रा तो एक ओर, भूख और प्यास भी नहीं लगती, और आज हमने अपने जीवन को चिन्ताओं से भर दिया है। परिणाम यह है कि आराम का हर सामान होने पर भी निद्रा नहीं आती। निद्रा कहती है, मेरे पास आना हो तो अकेले आओ, चिन्ताओं को परे कर दो, सब बातों को भूल जाओ और मेरी गोद में आ जाओ। हम सब–की–सब चिन्ताओं को साथ लेकर सोना चाहते हैं, तब निद्रा आएगी कैसे ?

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

सेवा में
बुक पोस्ट

श्री अशोक कुमार आनन्द, प्रधान तथा वरिष्ठ आर्य नेता, आर्य समाज कुल्लू

स्वर्गीय श्रीमति ओमावन्ती पत्नी स्व. महाशय राम सरन दास, कुल्लू

श्रीमती प्रेम आनन्द धर्मपत्नी श्री अशोक कुमार आनन्द

आर्य समाज कुल्लू का वार्षिक उत्सव प्रत्येक वर्ष की तरह १३ से १५ जून २०१४ तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के महान् सन्त और दयानन्द मठ दीनानगर के संचालक स्वामी सदानन्द जी महाराज ने प्रतिदिन अपने मधुर मनोहर प्रवचनों की अमृतवर्षा की तथा दयानन्द मठ दीनानगर की ओर से रोगग्रस्त लोगों को निःशुल्क औषधियाँ वितरित की जिस से उपस्थित जनता ने भरपूर लाभ उठाया। इस समस्त कार्यक्रम के पीछे समाज के प्रधान श्री अशोक आनन्द, श्री सत्यपाल भटनागर,श्री मनसा राम तथा गिरिजानन्द और उनके परिवारों का इस उत्सव को चार चांद लगाने में भरपूर सहयोग रहा। श्री अशोक कुमार आनन्द की माता श्रीमती ओमावन्ती तथा पुत्रवधु श्रीमती प्रेम आनन्द का विशेष योगदान रहा। स्व. श्रीमती ओमावन्ती जी अपने सुपुत्र अशोक कुमार के दोनों आंखों के नेत्र ज्योति वंचित होने पर अत्यन्त दुःखी रहती थी। मैं उनकी पीड़ा को दूर से बैठे–बैठे भांप लेता था। जब वह अपने लाडले बेटे को इधर–उधर हाथ मारते देखती थी, मैंने उनके दर्द को भांपते हुए निवेदन किया कि आपके पति स्व. श्री राम सरन जी बहुत उच्च व महान् विचारधारा के व्यक्ति थे। लेकिन आप अपने पुत्र के अन्धेपन से बिल्कुल डगमगा गई। मेरी बात सुनते ही उनकी आंखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हो गई। मैं समझ न पाया उनके अचानक बिना बादल के बरसात कहाँ से होने लगी। उन्होंने कहा–मेरे घर में सभी प्रकार की सुखशान्ति और समृद्धि की वर्षा हो रही है किन्तु अशोक की दोनों आंखों की नेत्रज्योति लुप्त हो जाने से मेरी स्थिति बिना पंखों के पक्षी जैसी हो गई है। वे आगे कुछ भी न बोली। मैंने उनकी दारूण और दुःखद स्थिति को भांपते हुए केवल उनसे यही कहा कि मुझे इस अवसर पर ऐसी बातें करते आपके हृदय को नहीं दुःखाना चाहिए था। यह अश्रुधारा अपनी मूकभाषा में आप की वेदना की कहानी कह रही है। उन्होंने केवल मात्र यही कहा कि आप के शब्दों से मेरे हृदय को शान्ति और बल मिला है। मैं अपने समस्त परिवार विशेष रूप से अशोक और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेम आनन्द पर गर्व करती हूँ।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।